चकमक

जुलाई, 1995
रु. 5.00

बाल विज्ञान पत्रिका

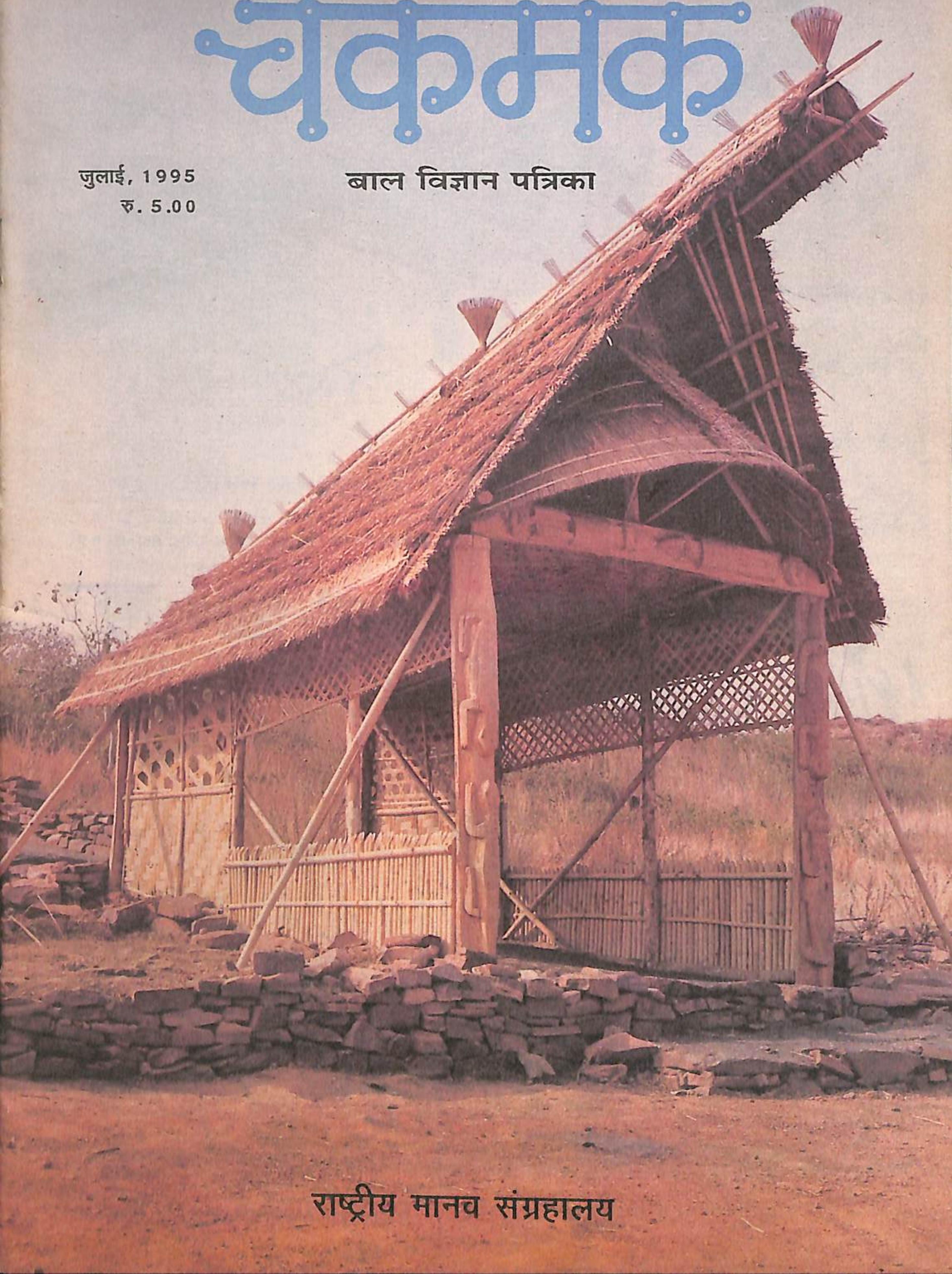

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

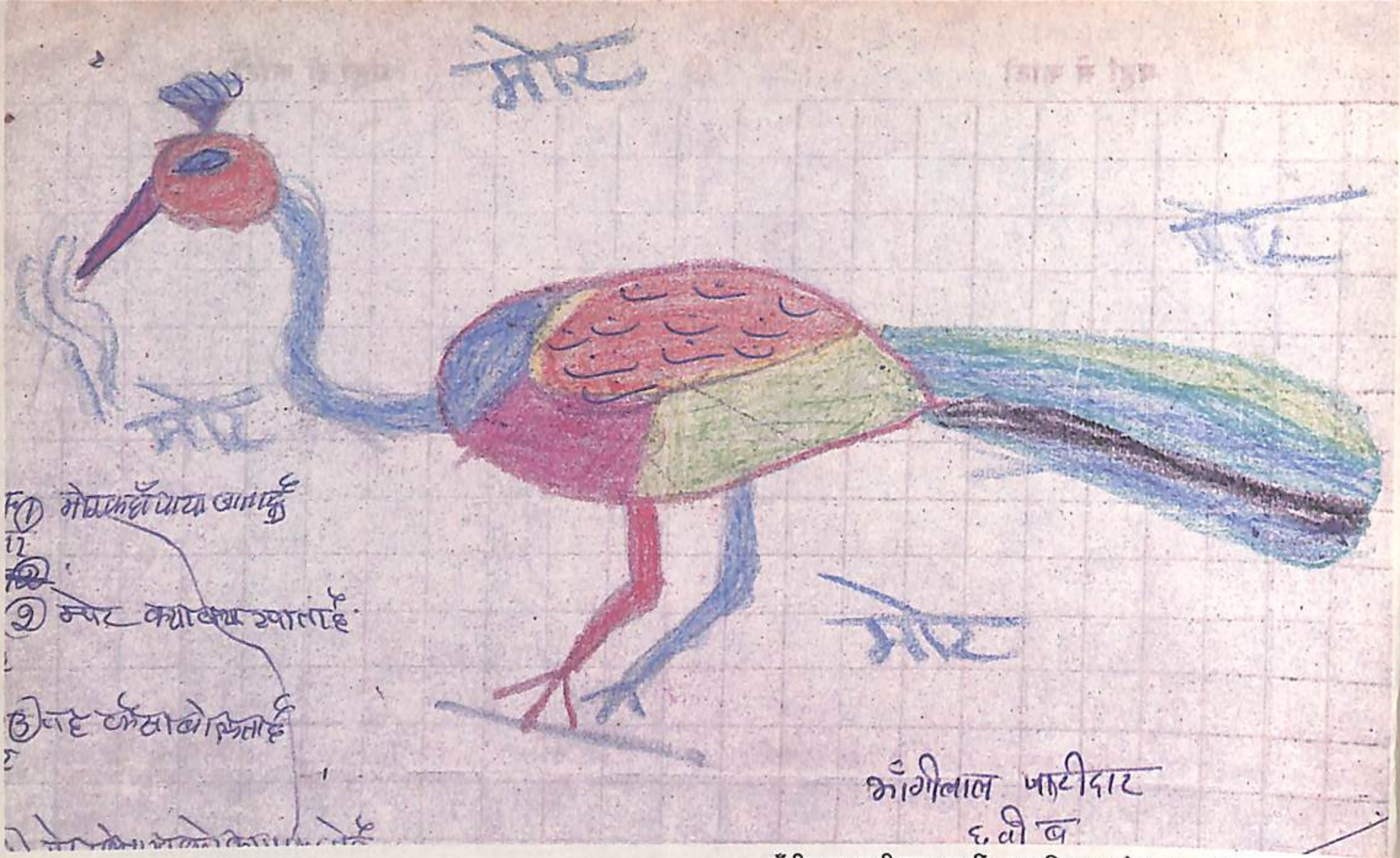

मॉंगीलाल पाटीदार छठवीं, लखूड़िया राठौर, मन्दसौर, म प्र.

दुर्गेश कुमार वैष्णव, नवमीं, हाटपीपल्या, देवास म प्र.

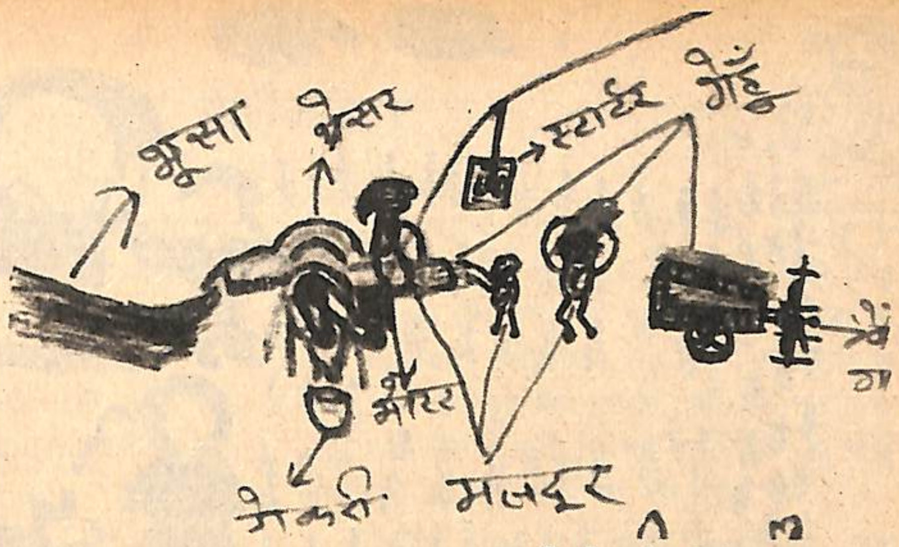

अटल बिहारी पाण्डेय, हिनौत, पन्ना, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-11 अंक 1 जुलाई 1995

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : *563380*

119 वें अंक में...

विशेष

9 ❑ राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

कहानियाँ

23 ❑ आदिवासी जनजातियों की पाँच दन्तकथाएँ

कविताएँ

8 ❑ ओ भोली चिड़िया
32 ❑ वर्षा दीदी

धारावाहिक

34 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?- समापन क़िस्त

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
22 ❑ हमारे वृक्ष- 39 : पाकड़
30 ❑ माथापच्ची

और यह भी

19 ❑ तुम भी बनाओ : वर्षा मापक
20 ❑ पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे
28 ❑ खेल खेल में : परी बनाओ
39 ❑ कार्टून संवाद

आवरण परिचय : नागाद्वार–राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल की जनजातीय आवास प्रदर्शनी का प्रवेश द्वार। यह नागा जनजाति के गाँवों में गाँव के प्रवेश पर बना होता है। फोटो सौजन्य : राष्ट्रीय मानव संग्रहालय।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

सत्यनारायण सिंह चौहान, चौथी, हिवाला, होशंगाबाद, म.प्र.

हमारा खेत

खेत हमारा सबसे प्यारा।
इसने हमको दिया सहारा।
सबको लगता है ये प्यारा।
हर किसान इसका रखवाला।
इसने ही सबको है पाला।
जिसका खेत वो है किस्मत वाला।
खेत हमारा सबसे प्यारा।
इसने हमको दिया सहारा।
बीज खाद पानी लेता है।
बदले में फसलें देता है।
इसके कारण है जग सारा।
इसने ही हम सबको सँवारा।
खेत हमारा सबसे प्यारा।
इसने हमको दिया सहारा।
इसके ही सब गुण गाते।
हलचल करते धूम मचाते।
ज़मीन के लिए लड़ पड़ते हैं।
लकड़ी लेकर चल पड़ते हैं।
खेत हमारा सबसे प्यारा।
इसने हमको दिया सहारा।

❑ लोकेन्द्र सिंह सोलंकी, भादूगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

मेरा पन्ना

हेलीकॉप्टर

एक बार मैं और मेरे दोस्त फुटबॉल खेल रहे थे। शाम के छः बज गए तभी अचानक बड़ी तेज़ की आवाज़ हुई। सभी बच्चे डर गए और भाग गए। दूसरे दिन हम लोग गिल्ली-डंडे का खेल, खेल रहे थे। उस दिन भी बड़ी तेज़ी से उसी तरह की आवाज़ हुई। पहले दिन की तरह दूसरे दिन भी हम लोग डरकर चले गए।

हम लोगों ने सोचा वह ऐसी क्या चीज़ है, जो हर रोज़ हमारे खेल में रुकावट डालती है। हम लोगों ने सोचा इसका ज़रूर ही कोई उपाय निकालना होगा। तीसरे दिन हम लोग छुपाछुपी का खेल, खेल रहे थे ताकि हम लोग उस वस्तु को छुपकर देख सकें। अचानक बड़ी तेज़ आवाज़ हुई। हम लोगों ने ऊपर की ओर देखा तो एक बहुत बड़ा हेलीकॉप्टर था। हमारे आसपास के सभी बच्चे डर गए थे। उनका डर दूर करने के लिए हमने उन्हें बताया कि वह हेलीकॉप्टर है। कोई हम लोगों की बात नहीं मान रहा था।

दूसरे दिन जब सभी बच्चों ने उस हेलीकॉप्टर को देख लिया तो उनका डर दूर हो गया। और हम लोग बहुत खुश हुए।

❑ मनोज कुमार द्विवेदी, छठवीं, पुरौना, रीवा, म.प्र.

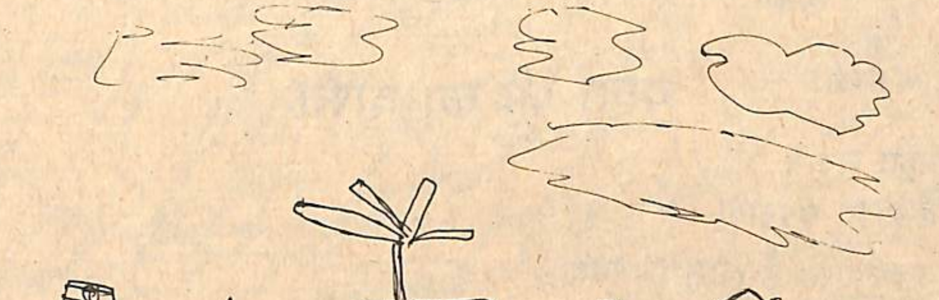

अनुज चौहान, पाँच वर्ष, टिमरनी, म.प्र.

चने खाए

मैं दस वर्ष का हूँ। मैं स्कूल ऑटो से जाता हूँ। हमारे स्कूल के रास्ते में एक चने का ठेला जाता था। मैं हमेशा उसमें से चने खींच लेता था। एक दिन जब मैंने चने खींचे तो मेरे हाथ में बहुत चने आ गए। उस औरत ने मुझे देख लिया। और ऑटो के पीछे दौड़ कर ऑटो रुका लिया। उसने मुझे तीन-चार थप्पड़ मारे और गालियाँ दीं। मैंने चने फैंक दिए। उस दिन के बाद से मैं चने के नाम से डरता हूँ। मैं उस औरत से बहुत डरता हूँ। सब बच्चे मेरा मज़ाक उड़ाते हैं।

❑ प्रवीण मादावत, उदयपुर, राजस्थान

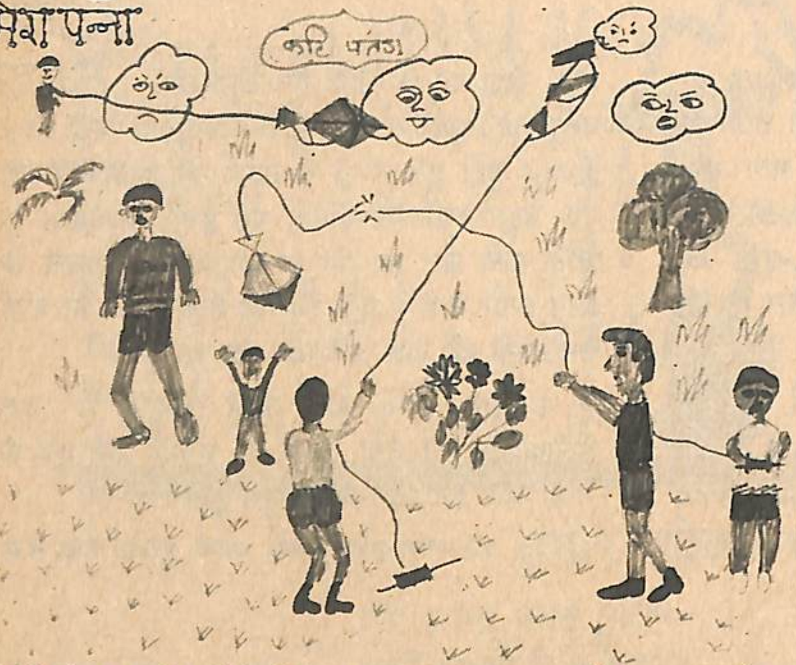

रिप्पी ग्रोवर, छठवीं, नई दिल्ली.

पतंग

हमने ख़रीदी एक पतंग
पतंग के शौक में फेल हुए हम
हिन्दी में मिले नम्बर ज़ीरो
पतंग उड़ाने में हम हैं हीरो
इंग्लिश में थे नम्बर कम
पतंग के शौक में फेल हुए हम
हमको फिर भी हुआ न ग़म
मम्मी हमसे हुई हैं तंग
पतंग के शौक में फेल हुए हम

❑ पद्मा, सातवीं, उन्हेल, उज्जैन, म.प्र.

दादा जी का दोस्त

मेरे दादा जी बहुत सयाने
यों तो उनके हैं दोस्त मनमाने।

पर एक दोस्त है ख़ास ही रहता
वह हरदम उनके पास ही रहता।

दादा जी उसको साथ में रखते
हमेशा उसको हाथ में रखते।

वह अन्य दोस्त है न्यारा
दादा जी का दोस्त प्यारा।

अगर वह दोस्त कहीं खो जाए
या फिर दूर कहीं सो जाए।

या फिर बबलू उठा ले जाए
उसको दूर भगा ले जाए।

दादा जी बबलू को मनाते
प्यार से दोस्त को मँगवाते।

तुम्हें बता दूँ बात जो बाक़ी
वह दोस्त कहलाता है लाठी।

❑ दलजीत सिंह, गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म.प्र.

चम्पालाल कुशवाहा, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

शरारत

हम और हमारा दोस्त एक ही कक्षा में पढ़ते हैं तथा हमारे मकान भी आमने-सामने हैं। हम लोग एक साथ खेलते हैं तथा एक साथ रात को कमरे में पढ़ते हैं। सोमवार को हमारे पापा जी सागर गए तो हमने और हमारे दोस्त ने तय किया कि आज अपन लोग स्कूल नहीं जाएँगे, जंगल से लकड़ियाँ लेने चलेंगे। हम दोनों ने अपनी साइकिल ली और जंगल की ओर चल दिए। वहाँ पर हमने एक खरगोश देखा, वहीं एक मोर भी देखा। फिर हम दोनों ने अपने-अपने लिए लकड़ियाँ इकट्ठी कीं। हमारा दोस्त बोला कि अपन एक सागौन का पेड़ भी काटेंगे। तो हमने कहा चलो।

जब हम पेड़ काट ही रहे थे इतने में वहाँ पर नाकेदार आ गया तो हम लोगों का पसीना छूट गया। उसने हम लोगों को मारने की धमकी भी दी। और कहा कि हम तुम्हारे घर पर कहेंगे तो हम लोग बहुत ही घबरा गए। उसने कहा कि जाओ भागो यहाँ से। हम दोनों सीधे घर आए और जल्दी से खाना खाया और हम लोग कमरे में चुपचाप पढ़ने बैठ गए।

दो घण्टे बाद हमारे पापा जी सागर से लौट आए और मौके पर वहाँ नाकेदार भी आ गया। उन्होंने हमारे पापा जी से शिकायत कर दी। कहा कि आपके बच्चे बहुत शरारत करते हैं। हमारे पापा जी को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने हमको बहुत पीटा। उन्होंने कहा अब तो ऐसा नहीं करोगे। हम लोग उनके सामने कुछ नहीं बोल पा रहे थे। उन्होंने कहा कान पकड़कर बोलो कि हम ऐसी शरारत नहीं करेंगे।

❑ चन्द्रभान ठाकुर, शाहगढ़, सागर, म.प्र.

मेरा पन्ना

कोयल की तान

कोयल की मीठी तान सुरीली
मन को मोह लेती
आम फले तो कोयल आई
बगिया के पेड़ों में
झूम-झूमकर गाती
तन मन मोह लेती
अपनी सुरीली तान छेड़कर
राही को रोक देती
कूक-कूककर मीठी भाषा कहती
मैं भी कोयल के संग गाती

❑ सावन रेखा शाह, पन्द्रह वर्ष, गुदमा, बीजापुर, बस्तर, म.प्र.

पवन सोनपरत, छठवीं, जैसिंगपुरा, उज्जैन, म.प्र.

बेवकूफ़ बनाने वाले

एक बार मैं हरदा हमारी जात के सम्मेलन में गया। उस सम्मेलन में मेरी दोनों बहनों की शादी थी। जिस दिन मैं हरदा गया था उस दिन मैंने सोचा कि थोड़ा घूमकर आता हूँ। मैं घूमने गया तो रास्ते में एक जगह बहुत भीड़ हो रही थी। मैंने सोचा 'चलो देखें क्या हो रहा है।' जब मैं भीड़ में घुसा तो मैंने देखा एक आदमी के हाथ में गिलास था और उसमें पानी था। पास में एक और गिलास था जिसमें लाल रंग था। बाद में उस आदमी ने डिब्बे में से कुछ निकाला और पानी वाले गिलास में डाल दिया। फिर उसने कहा कि अगर आपका कोई दुश्मन है और वह आपके भाई को मारना चाहता है तो वह उल्लू के बाल तथा उल्लू के नाखून का चूरन बनाकर आपके भाई की खाने की चीज़ों में मिला देगा। वह चूरन आपके भाई के ख़ून को पानी बना देगा, आपका भाई मर जाएगा।

फिर उस आदमी ने पानी वाले गिलास (जिसमें पहले भी कुछ डाला था) का पानी रंग वाले गिलास में डाल दिया। देखते-देखते वह लाल रंग मटमैले रंग में बदल गया।

उस आदमी ने कहा कि उसकी दवा खाने से पानी बना ख़ून वापस ख़ून बन जाएगा। फिर उस आदमी ने एक दवा निकालकर उस मटमैले रंग में डाल दी। वो वापस लाल रंग बन गया। यह देखकर सबने वो दवा ख़रीद ली। सबके चले जाने के बाद मैंने उस आदमी से कहा कि तुम लोगों को बेवकूफ़ बनाते हो। तुम्हारे पास जो लाल रंग था वह कास्टिक सोडा तथा परगोलेक्स की गोली का घोल था। और जो तुमने कहा था कि ये उल्लू के बाल तथा नाखून का चूरन है वह अम्ल था जिसको डालने पर मटमैला रंग बन जाता है। बाद में तुमने कास्टिक सोडा का घोल डाला था जिससे वह वापस लाल हो गया।*

यह सुनते ही उस आदमी ने खीझकर मुझे भगा दिया। मैं आगे घूमने चल दिया। मैंने सोचा आजकल कैसे-कैसे लोग हैं जो लोगों को बेवकूफ़ बनाकर पैसा कमाते हैं।

❑ गोपाल शर्मा, सन्दलपुर, देवास, म.प्र.

* परगोलेक्स का घोल एक रंगहीन सूचक है, जो क्षारीय माध्यम में गुलाबी हो जाता है जबकि अम्लीय माध्यम में रंगहीन ही रहता है।

कुमारी नाहिद खान, तीसरी, नर्मदा नगर, म.प्र.

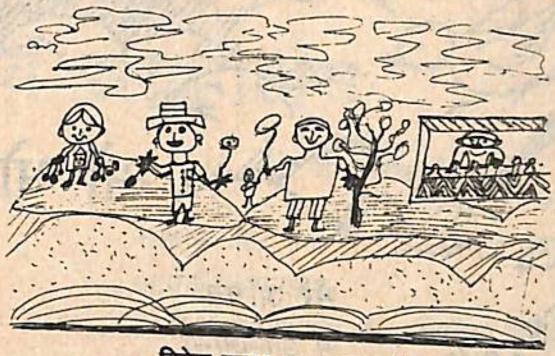

विवेक कहार, सुखतवा, होशंगाबाद, म.प्र.

तारा तेलकार, आठवीं, पिपलिया स्टेशन, मन्दसौर, म.प्र.

प्रियंका पॉल, पाँचवीं, बाल्को, बिहार

मुक्ति ज्योत्सना, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

देवयानी अग्रवाल, छठवीं, कानोड़, राजस्थान

सुनीता फिलोमिना, पाँच वर्ष, भोपाल

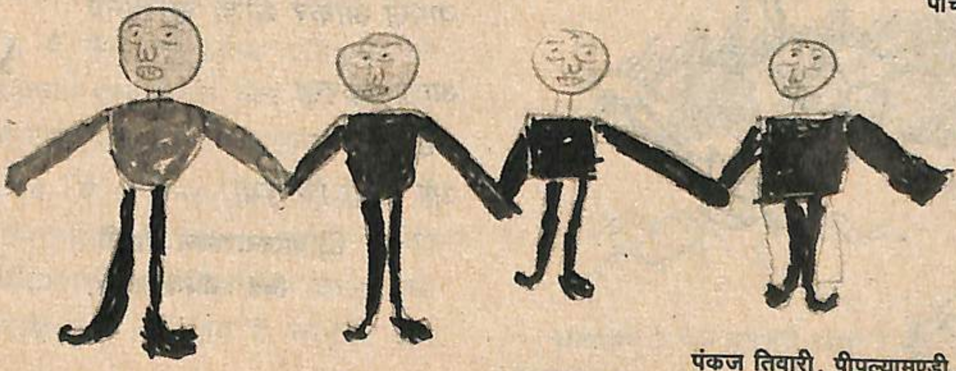

पंकज तिवारी, पीपल्यामण्डी, मन्दसौर, म.प्र.

ओ भोली चिड़िया

मेरे आँगन
में आ जाना
ओ भोली चिड़िया!

आना, आकर
छत-मुंडेर पर
तू बैठा करना
फुदक-फुदककर
नाचा करना, ज़रा नहीं डरना।

मीठे-मीठे
गीत सुनाना
ओ भोली चिड़िया!

नल पर जाना
बैठ नहाना
पंख फड़फड़ाना
चोंच हिलाना अपनी
भीगे तन को सहलाना।

चूँ-चूँ-चूँ
करके बतियाना
ओ भोली चिड़िया!

तुरत घोंसले
में घुस जाना
फिर वापस आना
अपने नन्हें बच्चों को भी
साथ-साथ लाना।

चुनकर दाने
उन्हें खिलाना
ओ भोली चिड़िया!

दूर-दूर तक
आसमान में
पंख खोल उड़ना
थक जाना तो
वापस आकर थोड़ा सुस्ताना।

आना, करना
नहीं बहाना
ओ भोली चिड़िया!

❑ राजनारायण चौधरी

चित्र : धीरेन्द्र मानके

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

❑ जया विवेक

अपना देश एक विशाल देश है, न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी। चाहे वह भाषा की बात हो, चाहे बोली की। चाहे रीति-रिवाजों का चलन हो या उत्सवों का आयोजन। इनमें एक विभिन्नता भी है। सारे देश की इस सांस्कृतिक झाँकी को एक साथ एक जगह पर देख पाना थोड़ा मुश्किल ही है।

पर मध्यप्रदेश में एक ऐसी जगह है जहाँ इस झाँकी को देखा जा सकता है। जगह है भोपाल का *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय।* बड़े तालाब के किनारे विंध्याचल पर्वतमाला की श्यामला और प्रेमपुरा पहाड़ी के अस्सी हेक्टेयर क्षेत्र में फैले इस संग्रहालय में हम प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक की (भारत में फैली) लोक और आदिवासी संस्कृति को एक साथ देख सकते हैं। संग्रहालय 1980 में बनना शुरू हुआ था और 1988 में इसे जन सामान्य के लिए खोला गया। वैसे तो संग्रहालय रूबरू देखने की चीज़ है। तुम्हें जब कभी भी मौका मिले या भोपाल आओ तो इसे ज़रूर देखना। इस अंक में हम संग्रहालय का एक संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

संग्रहालय द्वारा जारी प्रचार सामग्री के अनुसार संग्रहालय के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. मानव तथा उसकी संस्कृति के उद्विकास की कहानियों को प्रस्तुत करना, विशेषकर भारतीय परिप्रेक्ष्य में।
2. देश में फैले सांस्कृतिक प्रतिमानों की विविधता तथा उनके बीच की समानता या एकरूपता को सामने लाना।
3. मानव के विकास की कहानी के साथ-साथ मानव समूहों की विविधताओं, प्रागैतिहासिक काल तथा उसके बाद के समय में संस्कृति और समाज के बारे में प्रदर्शनियाँ आदि आयोजित करना।
4. तेज़ी से लुप्त हो रहे भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों का संकलन तथा उन्हें बचाए रखने के लिए प्रयास करना।
5. ऐसे सभी सम्बन्धित विषयों पर शोध करना तथा शोध को बढ़ावा देना।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर संग्रहालय में जो प्रदर्शनियाँ बनाई गई हैं, तथा समय-समय पर जो गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, उनके बारे में आगे पढ़ो। साथ-साथ चित्र भी देखते चलो।

शैलकला धरोहर

प्रागैतिहासिक कालीन मानव के बारे में जानने के लिए सामान्यतया आदिमानव द्वारा बनाए गए और इस्तेमाल किए गए उपकरणों, औज़ारों और शैलचित्रों का सहारा लेना पड़ता है। पुरातन महत्व के उपकरणों और औज़ारों को तो हम विभिन्न संग्रहालयों में जाकर देख सकते हैं, लेकिन शैल चित्रों को देखने के लिए तो उन जगहों पर ही जाना पड़ता है, जहाँ वे बने हैं। संग्रहालयों में तो

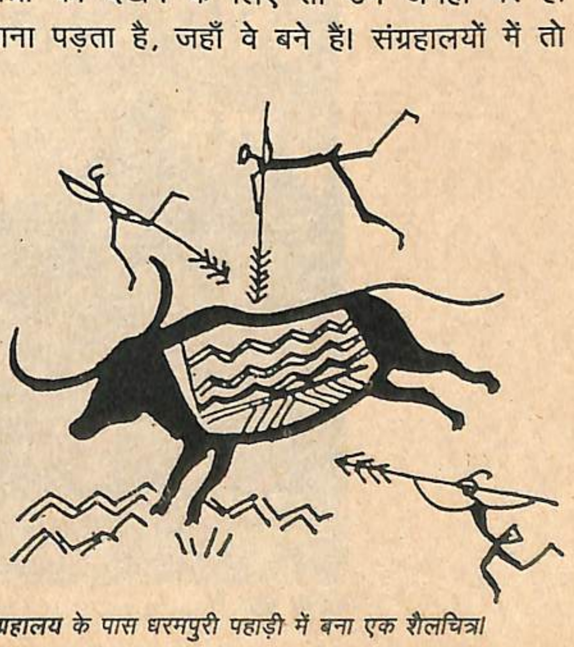

संग्रहालय के पास धरमपुरी पहाड़ी में बना एक शैलचित्र।

उनकी अनुकृति (नकल) ही देखी जा सकती है। पर इस संग्रहालय में ये चित्र अपने मूलरूप में मौजूद हैं। संग्रहालय परिसर के अन्दर स्थित प्रेमपुरा पहाड़ी में आदिमानव द्वारा बनाए गए चित्र हैं। शैलचित्रों का एक ऐसा ही समूह निकट की धरमपुरी पहाड़ी में भी है। ये चित्र लगभग दो हज़ार से दस हज़ार साल पुराने हैं। संग्रहालय में इन्हें शैलकला धरोहर नाम दिया गया है। वैसे तो यह अपेक्षा है कि आने वाले दर्शक ख़ुद ढूँढकर इन्हें देखें। लेकिन सभी के लिए इन्हें ढूँढ पाना शायद सम्भव नहीं होता है, इसलिए मार्गदर्शक चिन्ह और सूचना पट्ट भी लगाए गए हैं। इन चित्रों को संग्रहालय की मुक्ताकाश या खुली प्रदर्शनी के रूप में भी देखा जाता है। इस प्रदर्शनी का एक परिचयात्मक सूचना खण्ड भी है, जिसे अंतरंग प्रदर्शनी के रूप में जाना जाता है।

जनजातीय आवास

विभिन्न क्षेत्रों के आदिवासियों की मदद से एक और मुक्ताकाश प्रदर्शनी विकसित की गई है, जिसे 'जनजातीय आवास' नाम से जाना जाता है। इसमें देश के विभिन्न भागों में बसी, फैली आदिवासी जनजातियों के घर उनके पारम्परिक रूप और परिवेश की संरचना के साथ बने हैं। इन घरों को देखने पर एक क्षण को यह आभास होता है कि हम उनके बीच ही पहुँच गए हैं।

इस समय संग्रहालय में आओ नागा, ओरांग, जेमी नागा (नागालैण्ड), टोडा (तमिलनाडु), मिशिंग, बोडो कछार (असम), रबारी, चौधरी, राठवा (गुजरात), गदबा, सांवरा, उटीया कन्ध (उड़ीसा), थारू (उ.प्र.), वर्ली (महाराष्ट्र), कोंटा (नीलगिरि), संथाल, बिरहोर (बिहार), अगरिया, भील, कमार, रजवार, माड़िया (म.प्र.), जनजातियों के घर, उनके देवस्थान, युवा गृह (जैसे बस्तर का घोटुल), गाँव द्वार आदि बनाए गए हैं।

जब कभी संग्रहालय में ऐसा कोई आयोजन होता है जिसमें उक्त आदिवासी समूह भाग लेते हैं, तो उन्हें संग्रहालय में बने उनके इन आवासों में ही ठहराया जाता है। ताकि इन आवासों का अपने परिवेश से जीवन्त सम्बन्ध बना रहे।

तटीय गाँव

अपने आसपास के वातावरण के हिसाब से हमारा रहन-सहन, खानपान, बोलचाल, रीति-रिवाज, व्यवसाय आदि तय होता है। और इन चीज़ों से ही एक सांस्कृतिक पहचान भी बनती है।

आदिवासी जनजातियों की तरह समुद्र किनारे रहने वाले लोगों की भी अपनी अलग विशेषताएँ होती हैं। संग्रहालय में आन्ध्रप्रदेश, केरल और गुजरात के समुद्रतटों पर बसे ऐसे ही कुछ गाँवों में प्रचलित जीवन पद्धतियों को दिखाया गया है। ये सभी प्रदर्शनियाँ यहाँ स्थायी रूप से बनी हैं।

पूर्वी मध्यप्रदेश तथा बिहार में बसी धूमर तथा बिरहोर शिकारी जनजाति के पत्तों से बने घर। संग्रहालय की जनजातीय आवास प्रदर्शनी में इन्हें स्थायी रूप से बनाया गया है।

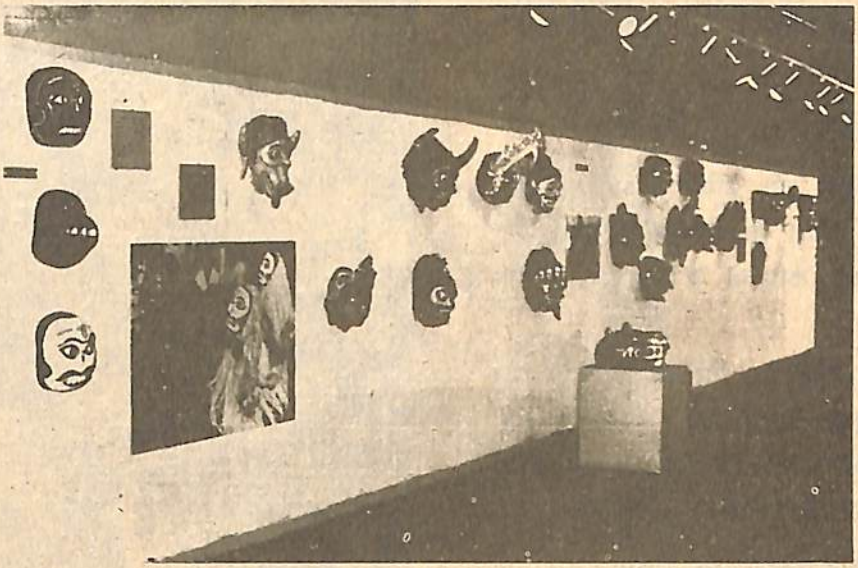

देश के विभिन्न क्षेत्रों में परम्परागत नृत्यों, उत्सवों में इस्तेमाल किए जाने वाले मुखौटे संग्रहालय की एक सामयिक प्रदर्शनी में।

सामयिक प्रदर्शनियाँ

स्थायी प्रदर्शनियों के अलावा संग्रहालय में समय-समय पर अलग-अलग विषयों पर भी प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं। जैसे मानव की कहानी, मुखौटे, प्रागैतिहासिक चित्र, आदिवासी कला, परिवार आदि। सामान्यतः ऐसी दो प्रदर्शनियाँ हर समय लगी रहती हैं। अब तक ऐसी 20 प्रदर्शनियों का आयोजन हो चुका है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

संग्रहालय में साल भर कुछ ऐसे आयोजन भी चलते रहते हैं, जिनमें भाग लेकर विभिन्न मानव समूहों की सृजनात्मक गतिविधि, सांस्कृतिक परम्पराओं, उनकी जीवन पद्धतियों और शिल्प तकनीकों को निकट से देखा, जाना और समझा जा सकता है।

जैसे कच्छ की कढ़ाई, चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना, धातु ढलाई आदि शिल्पों पर इस क्षेत्र

शैक्षणिक कार्यक्रम के तहत कुछ बच्चे चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाने का तरीक़ा सीख रहे हैं।

के विशेषज्ञों की मदद से प्रशिक्षण दिया जाता है। स्कूली बच्चों के लिए सर्दियों में विशेष आयोजन किए जाते हैं।

विभिन्न गतिविधियाँ

संग्रहालय में हर माह की पूर्णिमा को शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम होता है। विभिन्न अवसरों पर लोक और आदिवासी कलाओं का आयोजन भी होता है।

मानव के विकास के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित किसी एक विषय को लेकर प्रत्येक शनिवार की शाम को फ़िल्मों का प्रदर्शन भी किया जाता है। फ़िल्म का प्रदर्शन निशुल्क होता है।

इसी तरह विभिन्न विषयों पर समय-समय पर लोकरुचि व्याख्यान और सेमीनार भी आयोजित होते हैं। इन सभी आयोजनों की सूचना स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाती है।

मूल निवासी वर्ष (सन् 1993) में आयोजित एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय समारोह 'चरैवेति' में आदिवासी तथा समकालीन समूहों की जीवन पद्धति तथा संस्कृति के विभिन्न पक्षों को दर्शाया गया था। प्रदर्शनी में भारत के विभिन्न राज्यों के अलावा अन्य देशों से प्राप्त सामग्री भी प्रदर्शित की गई थी।

ऐसा ही एक आयोजन पर्यावरण दिवस पर जून, 95 में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पर्यावरण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर व्याख्यान, प्रदर्शनी तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संग्रहालय की एक विशेषता यह भी है कि वह केवल भोपाल तक ही सीमित नहीं है। वह अन्य क्षेत्रों में भी अपने आयोजन करता है। जैसे मार्च, 95 में भिलाई, म.प्र. में आदिवासी संस्कृति पर आधारित चिन्हारी (पहचान) का आयोजन किया गया था।

संग्रहालय में एक अच्छा संदर्भ पुस्तकालय भी है। इसमें बच्चों के लिए भी एक सन्दर्भ पुस्तकालय है। पुस्तकालय में आदिवासी साहित्य को संग्रहित करने का काम भी चल रहा है। फिलहाल यहाँ अलग-अलग आदिवासी भाषाओं की लगभग पाँच सौ पुस्तकें मौजूद हैं। पुस्तकालय के साथ-साथ एक फोटो लायब्रेरी भी है।

मणिपुर के लोक नर्तक जगोई मारोप नृत्य प्रस्तुत करते हुए।

शोध के अन्तर्गत हिमालय पर्वत शृंखला पर बसे अरूणाचल प्रदेश से लद्दाख तक फैले जनजीवन पर सभी तरह की सन्दर्भ सामग्री एकत्रित करने का काम भी चल रहा है।

संग्रहालय रोज़ सुबह ग्यारह बजे से शाम साढ़े पाँच बजे तक खुला रहता है। सोमवार तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा घोषित अवकाश के दिनों में संग्रहालय बन्द रहता है।

संग्रहालय भोपाल के मुख्य रेल्वे स्टेशन और बस स्टैण्ड से लगभग बारह किलोमीटर दूर है। संग्रहालय तक पहुँचने के लिए सुविधानुसार बस, आटो रिक्शा या अन्य वाहन का उपयोग किया जा सकता है। विशेष कार्यक्रमों के आयोजन के समय संग्रहालय द्वारा निशुल्क बस व्यवस्था भी की जाती है। ये बसें शहर के विभिन्न हिस्सों से दर्शकों को लाती, ले जाती हैं।

संग्रहालय में केवल वहाँ की प्रदर्शनियाँ ही नहीं बल्कि वहाँ से भोपाल शहर और उसके आसपास की प्राकृतिक छटा भी देखी जा सकती है।

(लेख में आए सभी चित्र राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के सौजन्य से)।

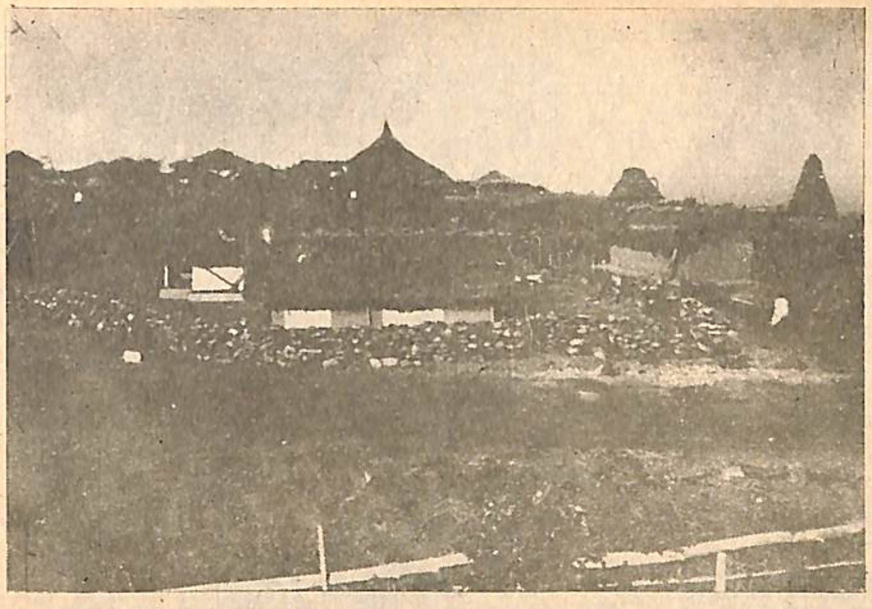

जनजातीय आवास प्रदर्शनी में उड़ीसा तथा तमिलनाडु के आदिवासियों के घर।

गदबा (उड़ीसा) जनजाति का एक घर।

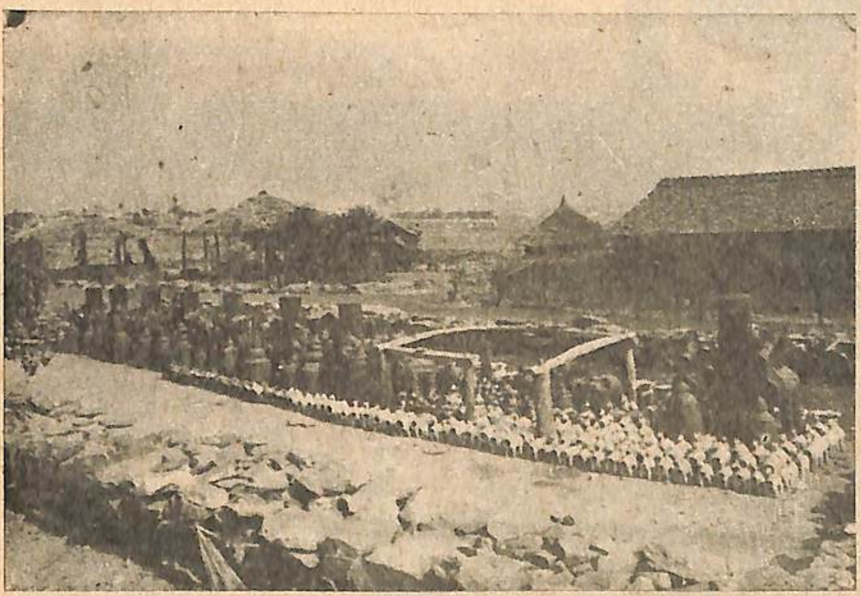

संग्रहालय में राठवा (गुजरात) जनजाति के घरों के पास ही बना उनका देवस्थल।

संग्रहालय की एक प्रदर्शनी में आदिवासियों के वाद्य यन्त्र तथा अन्य सामग्री।

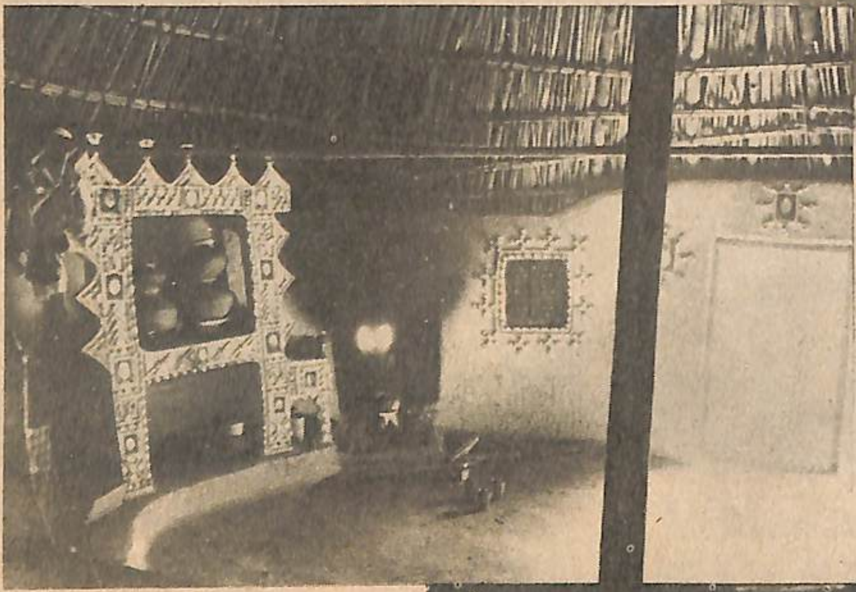

गुजरात की रबारी जनजाति के घर 'भुंगा' का एक भीतरी दृश्य।

छोटा उदयपुर (गुजरात) की राठवा जनजाति के घरों में बनाई जाने वाली धार्मिक महत्व की चित्रकारी 'पिठौरा' का एक नमूना, संग्रहालय में।

वर्ली (महाराष्ट्र) जनजाति का एक घर जनजातीय आवास प्रदर्शनी में। वर्ली युवतियाँ घर की दीवार पर चित्र बना रही हैं।

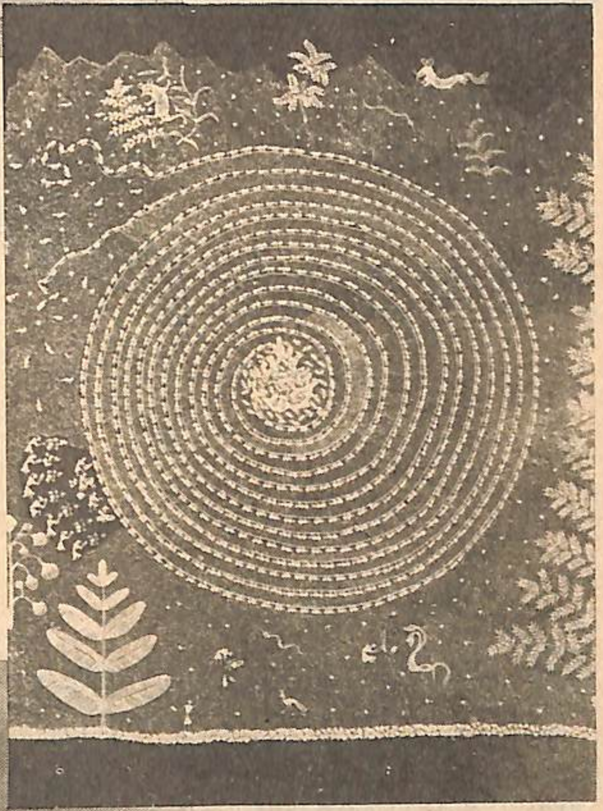

वर्ली शैली में बना एक भित्तिचित्र।

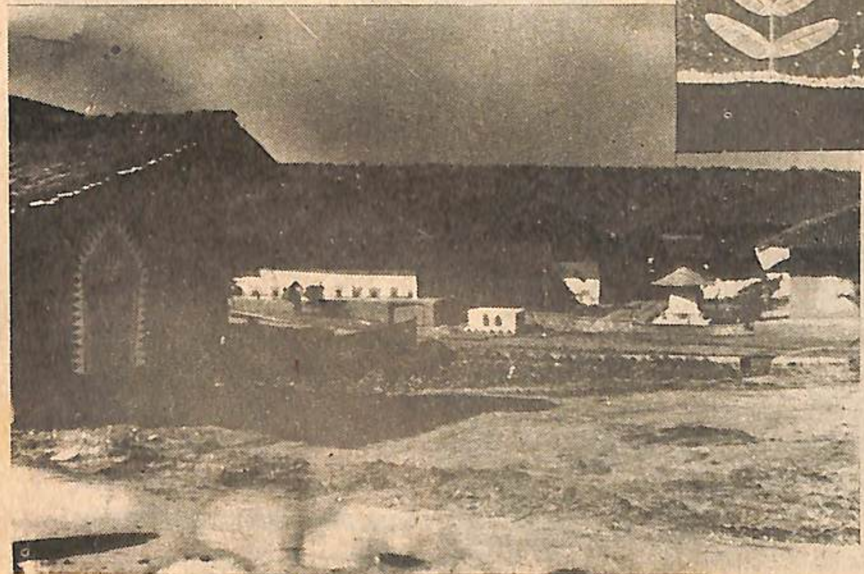

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय परिसर का एक दृश्य।

तमिलनाडु की पशुपालक जनजाति टोडा का एक घर और उसके पास ही बना देवालय।

असम की बोडो कछार जनजाति के लोग संग्रहालय में बने अपने घरों में।

जगदलपुर (बस्तर) में दशहरे पर निकलने वाली रथ यात्रा का रथ। यह रथ प्रतिवर्ष आदिवासियों के पुजारी की देखरेख में बनाया जाता है। रथ बनाने के लिए सामग्री जगदलपुर के आसपास के गाँवों से आती है। रथ यात्रा में पूरे बस्तर की जनजातियाँ अपने देवी-देवताओं के साथ शामिल होती हैं।

तटीय गाँव प्रदर्शनी में लगी एक सामयिक प्रदर्शनी का प्रवेश द्वार जो रबारी जनजाति की पारम्परिक शैली पर बना है।

एक सामयिक प्रदर्शनी चरैवेति में बना स्तम्भ।

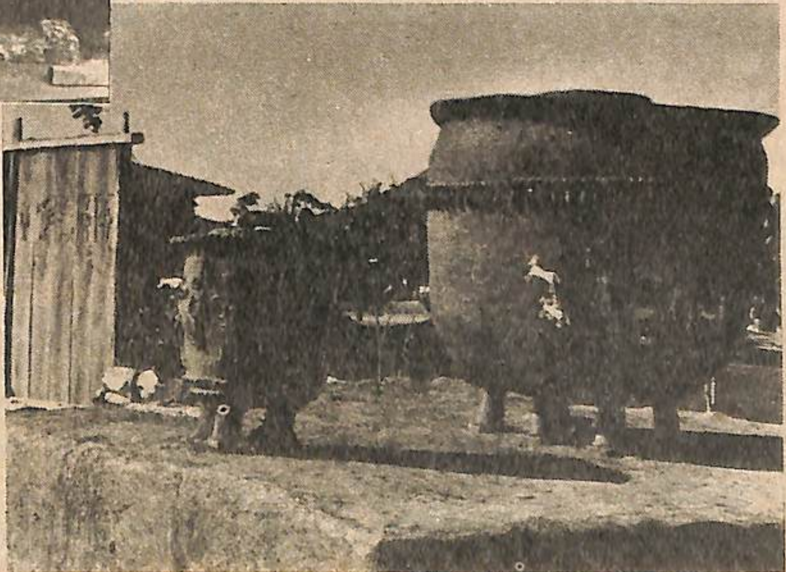

चरैवेति प्रदर्शनी में रखी अनाज एकत्र करने की आदिवासियों की कोठियाँ।

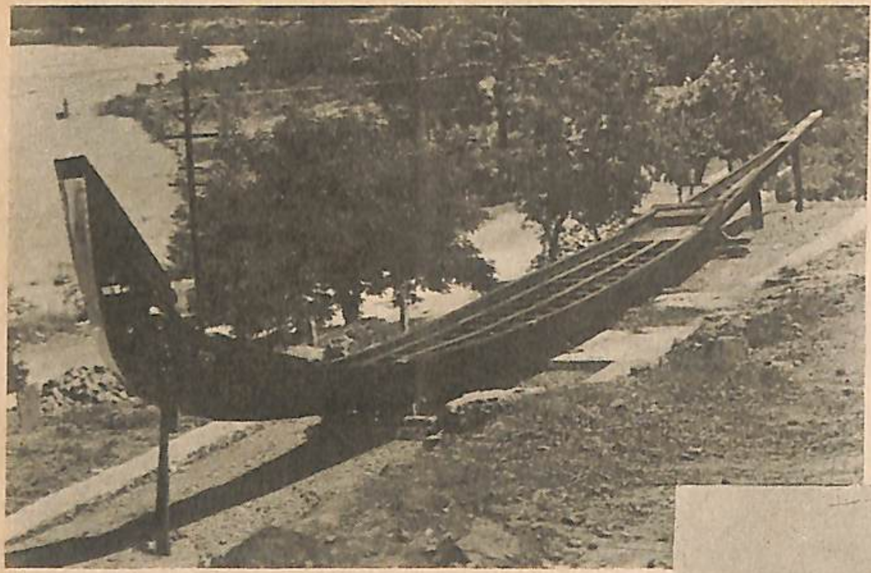

संग्रहालय की एक महत्वपूर्ण पहचान केरल की सर्प नौका।

केरल की नायर जनजाति का आवास 'नामकेट्टू।' इस 325 साल पुराने घर को केरल से लाकर संग्रहालय में पुनः स्थापित किया गया है।

तटीय गाँव प्रदर्शनी में आन्ध्रप्रदेश के तटीय गाँव के मछुआरों का एक घर!

वर्षामापक

"**कितनी** बारिश है, है न!" यह जुमला तुमने अक़्सर सुना होगा। लेकिन कभी सोचा है कि आख़िर कितनी बारिश है? रेडियो-टी.वी. में तुमने सुना होगा या अख़बार में पढ़ा होगा कि "कल रात सीहोर में अधिकतम बारिश 15 से.मी. रिकार्ड की गई।" या ऐसी ही कोई और वर्षा की रिपोर्ट। चलो आज देखते हैं कि इस तरह की घोषणा दे पाने के लिए क्या कुछ करना पड़ता है।

करना तो यही पड़ता है कि बारिश कितनी हुई यह नापना पड़ता है। यही नापने का यंत्र- वर्षामापक का एक आसान मॉडल बनाने की तैयारी है इस बार अपनी। जो सामान चाहिए वह बहुत मामूली है - एक बोतल, एक प्लास्टिक की कीप, एक प्लास्टिक के पतरे की चक्ती। अगर प्लास्टिक के पतरे की चक्ती न मिले तो टीन या रबर की चक्ती से भी काम चल जाएगा। और चिपकाने के लिए रबर सोल्यूशन।

एक बन्दोबस्त यह करना पड़ेगा कि कीप की नली और बोतल के गले की नाप ऐसी हो कि दोनों आपस में बढ़िया फिट हो जाएँ ताकि कीप सीधा खड़ा रहे। यह इसलिए कि बारिश का पानी

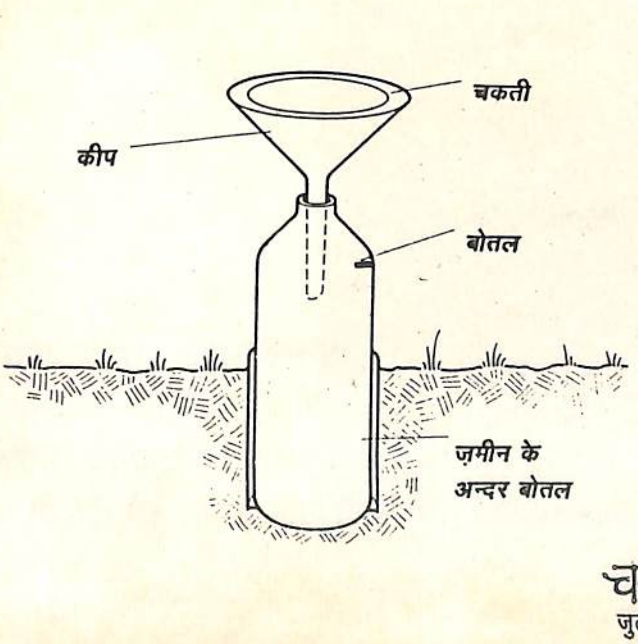

हमें कीप के ज़रिए ही इकट्ठा करना है। कीप के ऊपर प्लास्टिक, टीन या रबर की चक्ती को अच्छे-से चिपका दो। इससे कीप की ढाल वाली सतह पर गिरने वाली बूँदें उछलकर वापस बाहर नहीं जा पाएँगी। अपनी बोतल में जहाँ से वह सँकरी होने लगती है, एक निशान लगा लो।

अब जब सारी तैयारी हो जाए तो बोतल को चित्र के हिसाब से कहीं खुली जगह ज़मीन में आधा गाड़ दो। और बारिश हो तो पानी बोतल में इकट्ठा होने दो। बीच-बीच में तुम्हें इतना ही ख़्याल रखना है कि बोतल तुम्हारे लगाए गए निशान से ऊपर न भर जाए। पानी का तल जब निशान तक आ जाए तो उसे किसी और बर्तन में उड़ेल दो। वैसे बड़ी बोतल का उपयोग करने से यह काम तुम्हें ज़्यादा बार नहीं करना पड़ेगा।

दिन भर में कितनी बारिश हुई यह पता लगाने के लिए हमें दो आँकड़ों की मदद लेनी होगी। एक तो कितना पानी बरसा उसका आयतन। और दूसरा कीप पर लगी चक्ती के अन्दर के किनारे वाले गोले का क्षेत्रफल। यह काम गणित के सूत्रों से करना होगा।

वृत्त का क्षेत्रफल = $\frac{22}{7}$ क × क, वर्ग से.मी.

यहाँ 'क' यानी चक्ती के अन्दर वाले गोले की त्रिज्या या अर्धव्यास (से.मी. में)।

पानी का आयतन = $\frac{22}{7}$ ख × ख × बोतल में पानी की कुल ऊँचाई, घन से.मी.।

यहाँ 'ख' यानी बोतल के गोल सिरे (तली) की त्रिज्या या अर्धव्यास (से.मी. में)।

अब बारिश की मात्रा पता करने के लिए पानी के आयतन को वृत्त के क्षेत्रफल से भाग दे दो। जो संख्या मिली वही से.मी. में उस दिन की बारिश की मात्रा है। □□□

पृथ्वी, सूरज, चाँ

अक्टूबर' 95 में पूर्ण सू

तुम भी इसके बारे में

चित्र : आनन्द सिंह श्याम

ललोटा जनजाति की एक दन्तकथा

बहुत पहले, जब सृष्टि की शुरुआत हुई तब आज का सूरज चन्द्रमा था। और जो आज चन्द्रमा है, वह सूरज था। उस समय का सूरज भयंकर रूप से गर्म था। उसकी गर्मी से पेड़ों की पत्तियाँ झुलस जाती थीं। लोग गर्मी से परेशान और हैरान थे। तब उस समय के चन्द्रमा ने सूरज से कहा, 'तुम इतना तेज क्यों चमकते हो। तुम्हारी गर्मी से लोग परेशान हैं, पेड़ों की पत्तियाँ झुलसी जा रही हैं। इस तरह से तो सारी दुनिया एक दिन तहस-नहस हो जाएगी। इसलिए मैं तुम्हें आज चन्द्रमा बना देता हूँ और खुद सूरज बन जाता हूँ।' यह कहकर चन्द्रमा ने सूरज के मुँह पर गोबर फेंका जिससे सूरज चन्द्रमा बन गया और चन्द्रमा सूरज।

इसीलिए चन्द्रमा पर जो धब्बे दिखते हैं, कहा जाता है कि वे धब्बे गोबर के हैं।

'मिथ्स ऑफ मिडिल इण्डिया' (वेरियर एल्विन) से साभार।

जब से पृथ्वी बनी है, तब से आकाश
पुराने से पुराने मानवों ने भी वही आका
हम आज देखते हैं। आकाश में अजीबो
होते हैं - रात, दिन, सूर्य का दिख
उसकी कलाएँ, तारे व उनकी गर्दिश,
ज़ाहिर है इन सब बदलावों को समझने
हुए भय को दूर करने के लिए इतिहास
कथाएँ, दन्तकथाएँ, मिथक और विश्ले
ये मानव की संस्कृति का हिस्सा हैं, चा
विज्ञान की समझ से कितने ही अलग
जहाँ एक ओर हमें वैज्ञानिक तथ्य समझ
वहीं उतना ही ज़रुरी है इन मिथकों औ
को भी जानना। इसलिए नहीं कि ये सही
बल्कि इसलिए कि ये हमें हमारी संस्कृ
का एक मौक़ा देते हैं।

❑

कौन-सी बात ज़्यादा आसानी से
ललोटा जनजाति की दन्तकथा य
जानकारी? वैज्ञानिक जानकारी में
में नहीं आया, हमें लिखो।

ांद, तारे

ूर्य ग्रहण

जानो

दिखता रहा है। श देखा है जो -ग़रीब बदलाव ना, चन्द्रमा व वग़ैरह-वग़ैरह। या इनसे पैदा न में अनगिनत बण मौजूद हैं। हे वे आज की ा क्यों न हों। ानना ज़रूरी है, र दन्तकथाओं ी या ग़लत हैं, ति में झाँकने

विनोद रायना

समझ आई? ा वैज्ञानिक क्या समझ

सौर मण्डल का बनना

मज़े की बात यह है कि सौर मण्डल का बनना या सूरज, पृथ्वी, चन्द्रमा व ग्रहों का बनना आज तक वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य ही है। एकदम ठीक से नहीं मालूम कि ये सब एक साथ बने या अलग-अलग समय पर बने।

अब तक की जानकारी के आधार पर जो धारणा वैज्ञानिकों में ज़्यादा प्रचलित है उसके मुताबिक लगभग 460 करोड़ वर्ष पहले गैस व अन्य पदार्थों का एक विशाल बादल (**चित्र-अ**) शायद पास के किसी तारे में हुए विस्फोट के कारण एक चकरी की तरह घूमने वाली तश्तरीनुमा रचना में बदल गया (**चित्र-ब**)।

गुरुत्वाकर्षण की वजह से इस घूमती तश्तरीनुमा रचना का काफ़ी हिस्सा इसके बीचोंबीच जमा हो गया। इससे इस रचना के केन्द्र का तापमान बहुत अधिक हो गया। जिससे नाभिकीय ऊर्जा उत्पन्न होने लगी और केन्द्र चमकने लगा। आज इसे ही हम सूरज कहते हैं। बाकी गैसें और पदार्थ धीरे-धीरे ठण्डे होते गए और अलग-अलग जगहों पर पिण्डों के रूप में जमते गए (**चित्र-स**)।

ये पिण्ड ही आज हमें शुक्र, बुध, पृथ्वी आदि ग्रहों और उनके चन्द्रमाओं के रूप में दिखते हैं। इन ग्रहों पर मिलने वाले सभी तत्व, ऑक्सीजन, लोहा, कैल्शियम आदि जो हमारे शरीर में भी पाए जाते हैं, शुरू के गैस के बादल से ही बने हैं। (**चित्र-द**)।

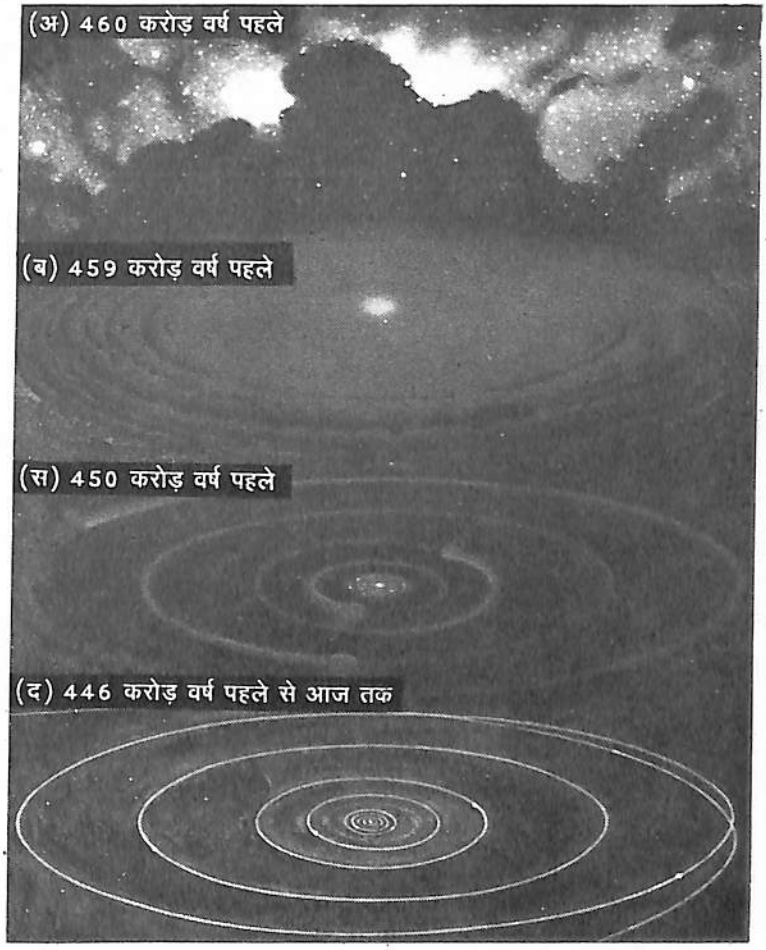

पाकड़ या पाकुर

यह पेड़ देखने में सामान्य तौर पर बरगद जैसा होता है लेकिन फिर भी बरगद जितना विशाल नहीं होता। इस पेड़ की ऊँचाई लगभग नौ से बारह मीटर तक की होती है, काफ़ी फैला हुआ छत्र भी होता है। इस पेड़ में भी बरगद की तरह जटाएँ निकलती हैं पर ज़्यादा नहीं, एक या दो। यह ख़ूब घना, छायादार पेड़ है। आमतौर पर पाकड़ का पेड़ कम ही देखने में आता है पर जहाँ मिलता है बहुतायत से मिलता है। यह पेड़ अधिकतर बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश के कुछ इलाकों में और दिल्ली में मिलते हैं।

इस पेड़ के पत्ते बरगद के पत्तों की तरह ही होते हैं। फ़र्क सिर्फ़ इतना होता है कि ये थोड़े पतले होते हैं। पतझड़ में इसके पत्ते झड़ जाते हैं। फिर जल्द ही उनकी जगह पर कोपलें निकल आती हैं जो पत्तों में बदलने लगती हैं।

गर्मियों में छोटे-छोटे फल लगते हैं। ये फल बरगद के फल से थोड़े छोटे होते हैं। पकने पर इन फलों का रंग सफ़ेद या गुलाबी हो जाता है। इस पेड़ की लकड़ी मुलायम होती है। इसका रंग भूरा होता है। लकड़ी जलाने के अलावा किसी और काम में नहीं आती। पेड़ की छाल हरे से भूरे रंग की और मुलायम होती है।

यह पेड़ बीज से और कटिंग करके, दोनों तरह से लगाया जाता है। पाकड़ के पेड़ पर चिड़ियों, कीड़ों की भरमार रहती है। इस पेड़ के पत्तों पर लाख के कीड़े पाले जाते हैं। इस पेड़ की टहनी से दाँत साफ़ करना अच्छा समझा जाता है। इस पेड़ के पत्तों को कई तरह की दवाओं के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

□□

नींद

लोग लगातार काम करते रहते थे। वे अपनी आँखें बन्द नहीं कर पाते थे। उन्हें सोना भी नहीं आता था। चाहे सूरज उगा हो, या चाँद या फिर अन्धेरा हो रहा हो, वे काम करते ही जाते थे। नंगा बैगा (उनके देवता) ने सोचा कि इन्हें आराम पहुँचाना चाहिए। उन्होंने मीठे ज़हर के पौधे (पहाड़ी क्षेत्र का एक पौधा) के फूल ढूँढकर उसका ज़हर निकालकर छिड़क दिया। जब हवा चली तो ज़हर लोगों की आँखों में गया और वे सोने लगे।

पर मीठे ज़हर के फूलों में उतना ज़हर नहीं था जितना चाहिए था। तो बैगा हर महीने अलग-अलग फूलों से नींद बुलाने लगे - जेठ में जंगली अंजीर के छुपे हुए फूलों के ज़हर से नींद आती है, आषाढ़ में सराई फूलों से, सावन में किरसैर फूलों से, क्वाँर में तिल के फूलों से, कार्तिक में साजा फूलों से, अगहन में धावर फूलों से, पूस में तिनसा फूलों से, माघ में सरगी फूलों से, फाग में देहावन फूलों से, चैत में आम के बौर से और बैसाख में जामुन के फूलों से नींद आती है।

(मण्डला, म.प्र. की धोबा जनजाति की एक दन्तकथा)

चित्र : लाड़ो बाई

बारिश

मेघ राजा और मेघ रानी भगवान के दरबार में रहते थे। भगवान ने उनसे तीन तुम्बी भरकर पानी माँगा। भगवान ने ये पानी की तुम्बियाँ भीमसेन को दे दीं और उससे कहा कि वह पानी को पृथ्वी पर छिड़क दे। भीमसेन तुम्बियाँ लेकर चल पड़ा। वह एक जंगल में से जा रहा था कि रात हो गई। वह एक जगह लेट गया और सो गया। जब वह सो रहा था तो वहाँ दुरहा दानो (दानव) आया और वह एक तुम्बी चुरा ले गया। अगली सुबह जब भीमसेन ने देखा कि एक तुम्बी की चोरी हो गई है, उसने कहा, "मैं इतना-सा पानी साल भर तक कैसे छिड़क पाऊँगा? मैं तो हर महीने - आषाढ़, सावन और भादों - एक-एक तुम्बी पानी फैंकने वाला था।" तब उसने दो तुम्बियों का पानी चार हिस्सों में बाँटा और चार महीनों के दौरान उसे छिड़कने लगा। बाकी आठ महीनों में दुरहा दानो अपनी तुम्बी में से पानी छिड़कता रहता है।

(कवर्धा, म.प्र. की बैगा जनजाति की एक दन्तकथा)

चित्र : लाड़ो बाई

चित्र : नर्मदा प्रसाद

आग

पहले के दिनों में लोग कच्चा खाना खाते थे। उन दिनों एक बहुत ग़रीब आदमी था। उसके तीन बेटे थे जो आसपास के घरों में थोड़ा-बहुत काम करके गुज़ारा चलाते थे। सबसे बड़े बेटे की शादी हो चुकी थी।

एक दिन उसकी पत्नी ने अपने सास-ससुर और उनके बेटों से कहा, 'देखो, यहाँ हर कोई अपनी मरज़ी से काम करता है। यह बताने वाला कोई नहीं है कि क्या किया जाना है।' सब लोगों ने इस बात पर गौर किया और अन्त में यह तय किया कि वे बहू को ही घर की मुखिया बनाएँगे। उसने कहा, 'ठीक है, मैं घर की मुखिया बन जाऊँगी। पर जो कुछ मैं कहूँ वह तुम लोगों को मानना पड़ेगा।' सब लोगों ने वादा किया कि वे उसकी बात मानेंगे।

उसने सबसे पहला हुक्म दिया, 'नया घर बनाओ।' जब घर बन गया तब उसने कहा, 'अब से जब तुम लोग अपने मालिक के खेतों से लौटो तो जो कुछ तुम्हें रास्ते में मिले - बाँस का एक टुकड़ा, थोड़ी सी रस्सी, कोई फल, कुछ भी - वह लाकर घर में रख देना।' सब लोग ऐसा ही करने लगे। कोई गोबर लाया, कोई बाँस का टुकड़ा, कोई कुछ पत्तियाँ लाया। वे जो कुछ लाते घर में रखकर फिर अपने मालिकों के घर खाना लेने जाते।

एक दिन सबसे छोटा भाई बहुत थका-हारा, ख़ाली हाथ लौटा। पर फिर उसे डर लगा कि बड़े भाई की पत्नी नाराज़ होगी। तो वह उठकर बाहर भागा और सड़क के किनारे घर ले जाने के लिए कोई भी चीज़ ढूँढने लगा। उसे एक मरा हुआ साँप मिला। उसने वह ले जाकर नए घर के अन्दर पटक दिया। जैसे ही वह साँप ज़मीन पर गिरा उसके मुँह से आग निकली। बड़े बेटे की पत्नी ने यह देखा और भागी-भागी सेमल की रुई लेकर आई। उसने साँप का मुँह पकड़कर रुई में आग लगाई। फिर आग पर उसने खाना पकाया और पूरे परिवार को खिलाया। सब लोग बहुत खुश हुए। फिर बड़ी बहू ने मरा हुआ साँप घर की छत पर पटक दिया।

(मण्डला, म.प्र. की पंका जनजाति की एक दन्तकथा)

साँप

एक गोंड और गोंडिन जंगल में रहते थे। गोंडिन के पेट से एक साँप, एक बाघ और एक इन्सान का बच्चा पैदा हुए। गोंडिन साँप के बच्चे को अपना दूध पिलाकर एक ऐसे चूल्हे में सुलाती थी जो जलाया नहीं जाता था। चूल्हे में वह मिर्च और लहसुन रख देती थी जिसे साँप अक़्सर मुँह में रखकर खेलता रहता था।

उनका बेटा बड़ा हुआ तो उसकी शादी हुई और बहू घर आई। बहू को इस घर के रिवाज पता नहीं थे। सो एक दिन उसने उस चूल्हे में भी आग जलाई जिसमें साँप सोया हुआ था। साँप लगभग आधा जल गया। उसने कहा, 'तुम्हें लगता है कि तुम मेरी भौजी हो इसलिए मुझे डरा सकती हो?' इतना कहकर उसने उसे काट लिया। उसके मुँह में जो मिर्च और लहसुन था वह ज़हर में बदल गया था।

जब वह लड़की मरने-मरने जैसी हो गई तो साँप ने अपने पिता को बुलवाया और कहा, 'अब मेरे मुँह में ज़हर हो गया है। इसलिए तुम्हें गुनिया बनकर यह सीखना पड़ेगा कि अगर मैं किसी को काट दूँ तो उसका इलाज कैसे किया जाए।' उसने उस गोंड को इसका तरीक़ा सिखा दिया और गोंड ने वक़्त रहते अपनी बहू को बचा लिया।

(बिलासपुर, म.प्र. की कहार जनजाति की एक दन्तकथा)

चित्र : हुताराम अधिकारी

नमक

एक आदमी और औरत को बहुत सालों तक बच्चे नहीं हुए। अन्त में सुसरी माई की मदद से उनके यहाँ एक लड़का पैदा हुआ। पर जन्म के बाद से ही बच्चा माँ का दूध नहीं पीता था। वह कुछ खाता भी नहीं था और बहुत ही दुबला हो गया। उसकी माँ ने अपने आदमी से कहा, 'भगवान ने हमें यह बच्चा तो दे दिया पर यह कुछ खाता नहीं और ऐसे तो जल्दी ही मर जाएगा।' उसी रात उन दोनों-आदमी और औरत को एक सपना आया। सपने में किसी ने उनसे कहा, 'तुम लोग अपना खाना बग़ैर नमक के खाते हो। इसलिए दूध पानी की तरह होता है - बिना किसी स्वाद का। इसीलिए बच्चा दूध नहीं पीता।'

दूसरे दिन वह आदमी नमक की खोज में निकला। पर नमक तो दुनिया में कहीं भी नहीं था। अन्त में वह कण्डलपुर पहुँचा जहाँ नमकत्री देवी का राज था। उसने देवी की बहुत मान-मनोब्बल की, तब देवी ने अपना जिगर निकालकर उसे दिया और कहा, 'इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो और फिर कोई ऐसी जगह ढूँढो जहाँ सफ़ेद पत्थर हों। उन पत्थरों पर ये टुकड़े बिखेर दो। रात भर इन्तज़ार करो, सुबह उन पत्थरों को घर ले जाना और उन्हें खाने के साथ मिलाकर खाना।' उस आदमी ने ऐसा ही किया और पत्थर नमक में बदल गए। जब से माँ ने नमक खाया तब से आज तक बच्चे माँ के दूध से चिपके रहते हैं।

(बरभाटा की धाँवर जनजाति की एक दन्तकथा)

चित्र : हुताराम अधिकारी

(आदिवासी जनजाति की ये दन्तकथाएँ वेरियर एल्विन द्वारा लिखी गई किताब 'मिथ्स ऑफ मिडिल इण्डिया' से साभार ली गई हैं।)

परी बनाओ

तुमने अक़्सर परियों के बारे में कहानियों में ही पढ़ा या सुना होगा। परी चमत्कार करती है, सबका भला करती है। पर वास्तव में वैसा कुछ होता नहीं, यह सब जानते हैं। खैर यह तो बिलकुल अलग बात है कि सच में क्या होता है। लेकिन परियों का रूप-रंग, वेश-भूषा हमारा ध्यान तो अपनी तरफ खींचती ही है। इसीलिए अलग-अलग तरह की सजावटी परियाँ बनाकर तुम अपने लिए इकट्ठी करो और दोस्तों को भी दो।

इसके लिए थोड़ा मोटा काग़ज़, पेंसिल, कैंची आदि इकट्ठे कर लो।

अब बड़े चित्र को मोटे काग़ज़ पर उतार लो। चाहो तो पहले ट्रेंसिग काग़ज़ पर उतार लो फिर उससे मोटे काग़ज़ पर।

अब मोटी साबुत रेखा पर से चित्र को बाहर से काट लो। परी के पंख और हाथों के बीच की रेखा पर से भी काटना है। साथ ही चित्र के अन्दर बनी मोटी रेखा पर भी बाहर से 'अ' तक तथा बाहर से 'ब' तक काटना है। जहाँ टूटी रेखाएँ हैं वहाँ से काग़ज़ को आगे की तरफ मोड़ दो।

जब काटने और मोड़ने का काम पूरा हो जाए तब कटे हुए 'अ' हिस्से को 'ब' में फँसा दो। परी का मुकुट भी काटकर उसके सिर पर लगा दो। रंगीन पेंसिल से या स्कैंच पेन से परी का चेहरा बना लो। पंखों का आकार बदलकर या कपड़ों पर डिज़ाइन बनाकर और परियाँ भी बना सकते हो।

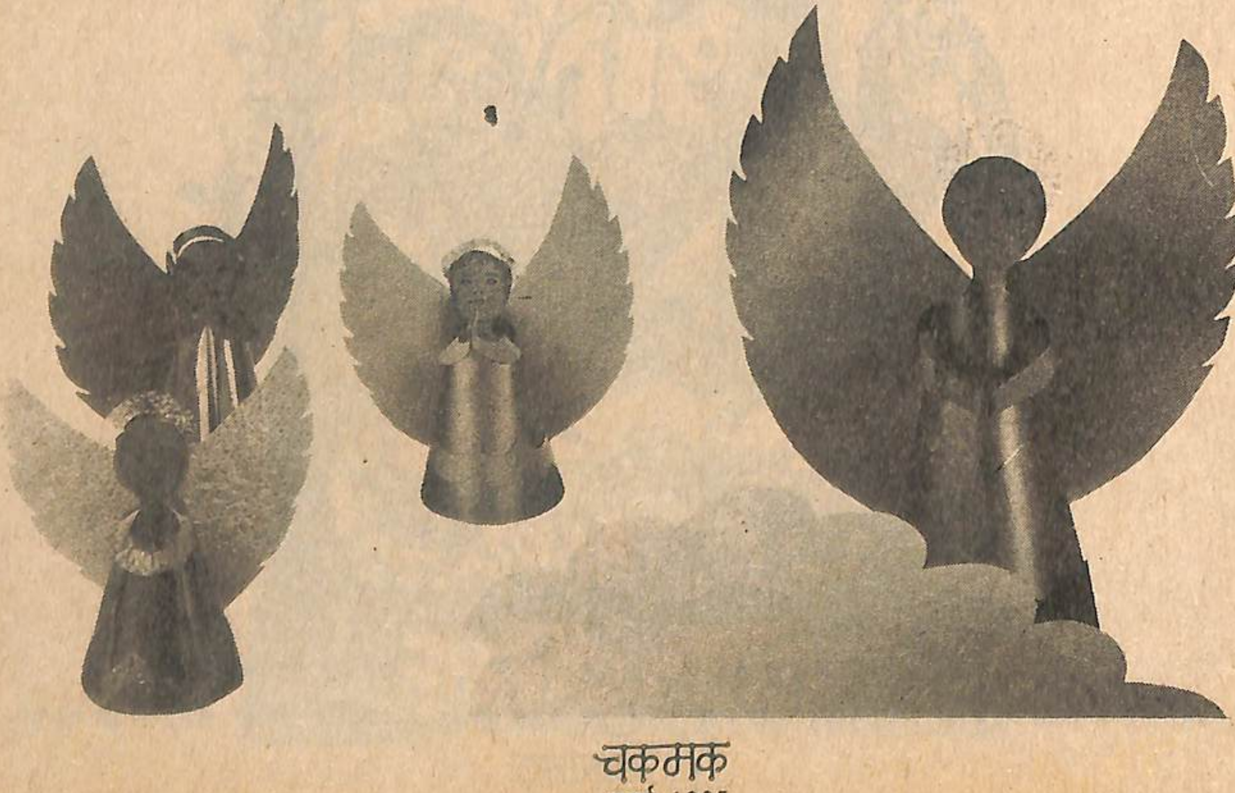

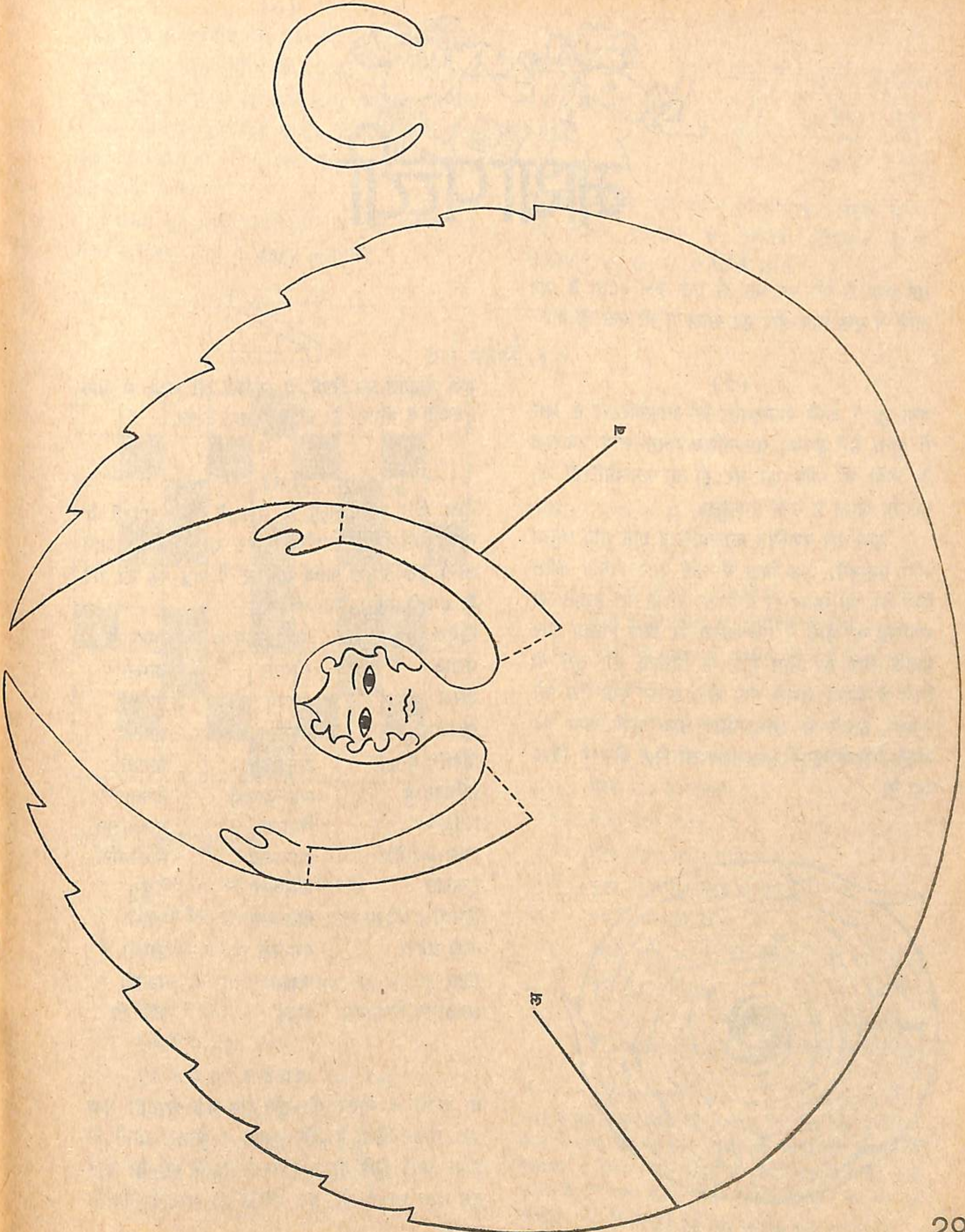
ब
ल

माथापच्ची

(1)

वह क्या है जो हर पल में एक बार आता है, हर लम्हे में एक बार और हर साल में भी एक ही बार?

(2)

क्या तुमने कभी राजस्थान के कालबेलियों के बारे में सुना है? इनका पारम्परिक काम साँप पकड़ना है। कहीं भी साँप का डर हो तो कालबेलियों को बुलाया जाता है उन्हें पकड़ने।

एक बार रणसिंह कालबेलिया एक गाँव पहुँचा साँप पकड़ने। एक बिल में कई सारे विषैले करैत छिपे बैठे थे। ऊपर से धीरे-धीरे थोड़ी रेत हटाने पर रणसिंह को बीच में एक करैत का सिर दिखा। और बाहरी सिरे पर तीन पूँछ भी दिखाई दीं। तुम भी चित्र में देखो। उसने गौर से देखकर एक पूँछ को पकड़ा, झटके-से खींचा और ठीक उसी साँप को अपने थैले में डाल दिया जिसका सिर बीच में दिख रहा है।

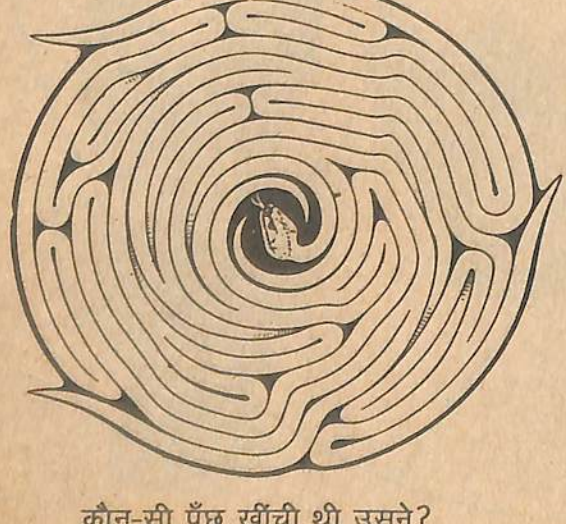

कौन-सी पूँछ खींची थी उसने?

(3)

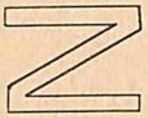

इस आकृति को सिर्फ़ दो लकीरों की मदद से आठ टुकड़ों में बाँटना है। कोशिश कर देखो।

(4)

नीचे तीन तालिकाओं में देश के कुछ प्रदेशों के नाम, उनकी राजधानियाँ और उनमें बोली जाने वाली एक प्रमुख भाषा है। पर ये गड्ड-मड्ड हो गए हैं। इनकी सही जोड़ी जमाओ।

त्रिपुरा	तिरुवनंतपुरम	गुजराती
पंजाब	श्रीनगर	बांग्ला
केरल	पणजी	लेपचा
महाराष्ट्र	चण्डीगढ़	तमिल
पश्चिम बंगाल	अगरतला	पहाड़ी
तमिलनाडु	अहमदाबाद	ककबार्क
सिक्किम	शिमला	मलयालम
जम्मू-कश्मीर	हैदराबाद	निकोबारी
गुजरात	कलकत्ता	तेलुगु
हिमाचल प्रदेश	पोर्ट ब्लेयर	मराठी
आंध्र प्रदेश	गंगटोक	डोगरी
गोवा	मद्रास	पंजाबी
अण्डमान निकोबार	बम्बई	कोंकणी

(5)

दो खम्भे 4 मीटर की दूरी पर गड़े हुए हैं। एक 10 मीटर ऊँचा है और दूसरा 7 मीटर। दोनों के ऊपर वाले सिरे से एक रस्सी तानी गई है। क्या तुम बता सकते हो, इस रस्सी की लम्बाई कितनी होगी?

(6)

गीतू ट्रेन से इन्दौर जा रही थी। आधे रास्ते पर उसकी नींद लग गई। जब उसकी नींद खुली तो कोई स्टेशन गुज़र रहा था। नाम पढ़कर गीतू ने सोचा, 'जितनी दूरी मैंने सोकर बिताई अब उसका आधा ही बचा है। यानी आधे-पौन घण्टे में इन्दौर आ जाना चाहिए।'

क्या तुम बता सकते हो कि कुल सफ़र का कितना हिस्सा गीतू ने सोकर बिताया?

(7)

पहली आकृति को दर्पण के सामने रखकर दर्पण को उल्टा पकड़ने से इसका प्रतिबिम्ब कैसा दिखेगा? क, ख, ग, घ में से चुनो।

वर्ग पहेली-49

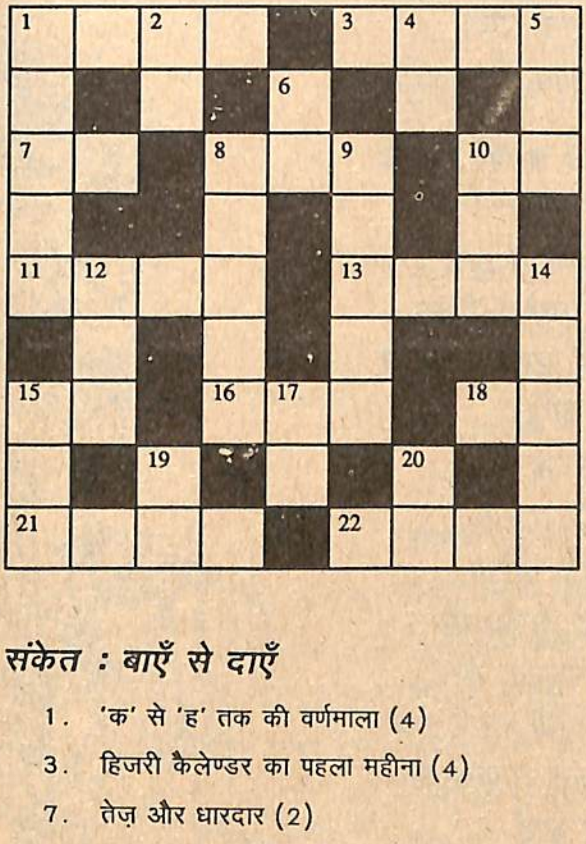

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. 'क' से 'ह' तक की वर्णमाला (4)
3. हिजरी कैलेण्डर का पहला महीना (4)
7. तेज़ और धारदार (2)
8. क्रिकेट के स्पिन गेंदबाज इस तरह की गेंद भी फेंकते हैं (3)
10. मछली भी, दवा भी (2)
11. मुकदमे में होने वाले जवाब-सवाल (4)
13. मुहावरे में साथ छोड़ देना (2, 2)
15. गाओ तो इसका ख्याल रखना (2)
16. वार ना करने में है- निकल पड़ना (3)
18. संस्कृत में मेरा (2)
21. युद्ध में मचती है (4)
22. एक प्रसिद्ध लोककवि (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. काट-छाँट करना (5)
2. अधिकार के लिए कह (2)
4. मिस्र के पिरामिडों में सुरक्षित रखी लाशें (2)
5. जूमन की हेरफेर में ज्योतिष विद्या है (3)
6. झूले की रमक (2)
8. हर गुन गा तो अपराधी (5)
9. लकीर के फकीर का पर्यायवाची मुहावरा (2,3)
10. शिंदे ढाबा में रहवासी (3)
12. छोटा चाकू (3)
14. किम नमुना, असम्भव है (5)
15. कृष्ण का एक मशहूर दोस्त (3)
17. हवा में शाबाशी (2)
19. उल्टा काट, पड़ौसी देश की मुद्रा (2)
20. सदा गुलाम है (2)

❑ हरिकिशन माली, आगर-मालवा, शाजापुर द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों, उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली - 49 का हल अक्तूबर, 95 के अंक में देखें।

वर्षा दीदी

दूर देश में रहकर आई
आठ महीने
शरमाती, मुस्काती
छम् छम् वर्षा दीदी
सोने की पायल छनकाती

देखा आँखें चमकीं सबकी
खिल गए चेहरे
हवा हिंडोलों में झूले
गाएँ गीत पखेरू-पीपल
मोर पपीहा श्यामा कोयल
झन् झन् झींगुर
टर् टर् मेंढक
उमड़े नदी तलैया
धूल नहाती गौरैया
लेके आए 'सूरज भैया'
चढ़कर 'पछुआ' मेल
तरस रही थी धरती मैया
गले लगाया आकुल होकर
आँखें भर आईं
बरसे आँसू टप्...टप्...टप्....
ओहो! संग में दूल्हा बादल!
डाले हैं आँखों में काजल

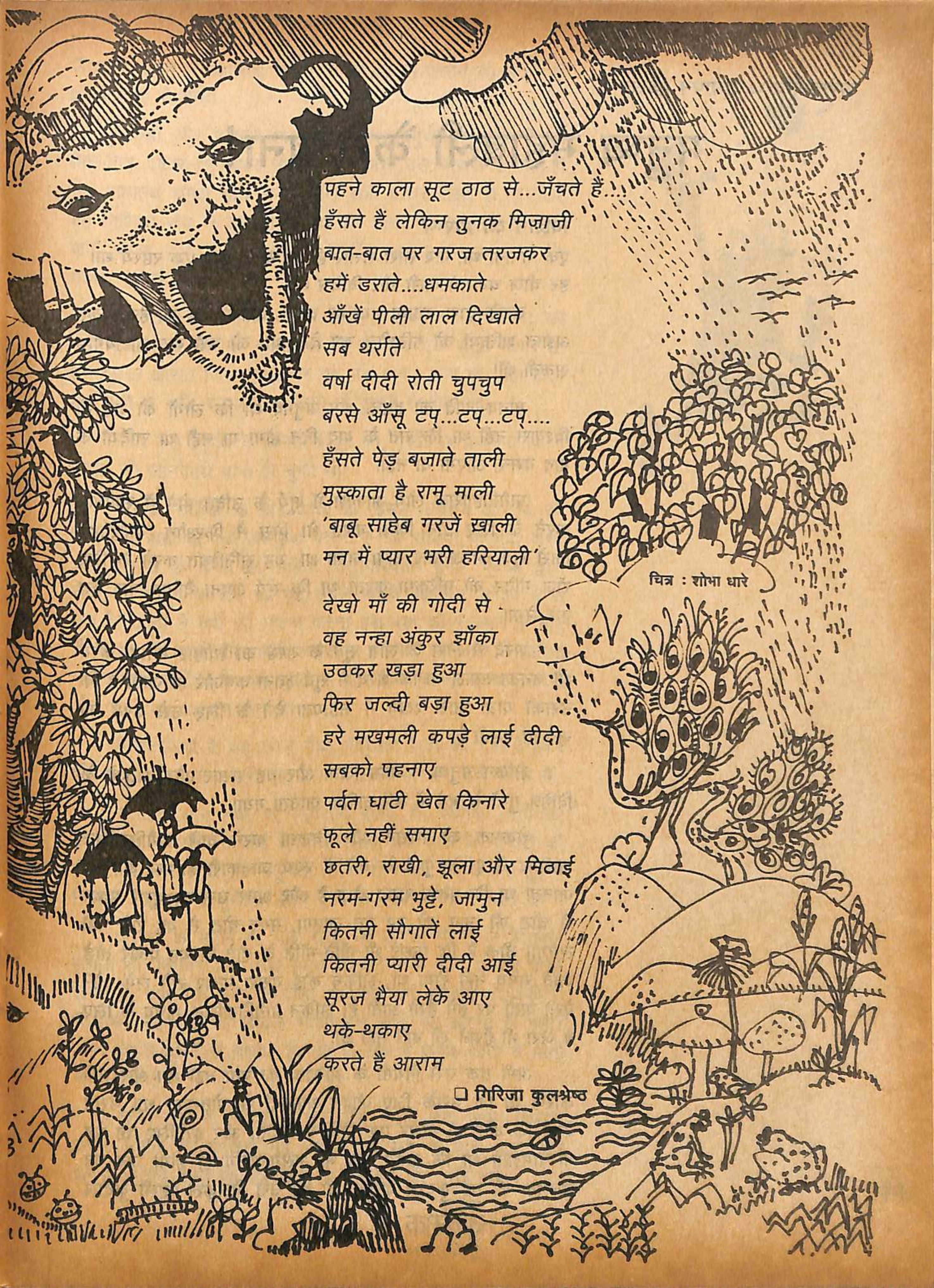

पहने काला सूट ठाठ से...जँचते हैं...
हँसते हैं लेकिन तुनक मिज़ाजी
बात-बात पर गरज तरजकर
हमें डराते....धमकाते
आँखें पीली लाल दिखाते
सब थर्राते
वर्षा दीदी रोती चुपचुप
बरसे आँसू टप्...टप्...टप्....
हँसते पेड़ बजाते ताली
मुस्काता है रामू माली
'बाबू साहेब गरजें ख़ाली
मन में प्यार भरी हरियाली'

देखो माँ की गोदी से
वह नन्हा अंकुर झाँका
उठकर खड़ा हुआ
फिर जल्दी बड़ा हुआ
हरे मखमली कपड़े लाई दीदी
सबको पहनाए
पर्वत घाटी खेत किनारे
फूले नहीं समाए
छतरी, राखी, झूला और मिठाई
नरम-गरम भुट्टे, जामुन
कितनी सौगातें लाई
कितनी प्यारी दीदी आई
सूरज भैया लेके आए
थके-थकाए
करते हैं आराम

❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

चित्र : शोभा धारे

मनुष्य महाबली कैसे बना!

विज्ञान का प्रारम्भ

एक ज़माना था, जब सारा संसार ही मनुष्य के लिए एक रहस्य था। हर चीज़ चकराने वाली और विचित्र थी।

उसके द्वारा उठाया गया हर क़दम, उसकी बाँह की हर हरक़त अज्ञात शक्तियों को गतिशील कर देती थी, जो उसे बना या बिगाड़ सकती थीं।

मानव-जाति को इतना कम अनुभव था कि लोगों को यह भी विश्वास नहीं था कि रात के बाद दिन होगा या नहीं या सर्दियों के बाद वसन्त आएगा या नहीं।

प्रागैतिहासिक लोग आकाश में सूर्य के उदित होने में सहायता करने के लिए टोने किया करते थे। मिस्र में फिरऔन (बादशाह), जिसे सूर्य का अवतार माना जाता था, यह सुनिश्चित करने के लिए रोज़ मंदिर की परिक्रमा करता था कि सूर्य अपना दैनिक चक्र पूरा कर लेगा।

शरद में मिस्र के लोग सूर्य के डण्डे का त्यौहार मनाया करते थे। उनका ख्याल था कि शरद में सूर्य इतना कमज़ोर हो जाता है कि उसकी यात्रा जारी रखने में सहायता देने के लिए उसे डण्डे की ज़रूरत पड़ती है।

लेकिन मनुष्य ने काम किया और वह संसार और वस्तुओं के विभिन्न गुणों के बारे में अधिकाधिक जानता गया।

चकमक को घिसने और चिकना करने वाले प्रागैतिहासिक कारीगर ने इसके गुणों के बारे में स्वयं जानकारी हासिल की। वह जानता था कि पत्थर सख्त होता है और अगर उस पर दूसरे पत्थर से चोट की जाए, तो वह टूट जाएगा, मगर चोट से वह रोने नहीं लगेगा। ठीक है कि पत्थर भी भाँति-भाँति के होते हैं। यह पत्थर तोड़े जाते समय नहीं रोया था, लेकिन कोई दूसरा पत्थर रोने लगे, तो? ऐसी बातों पर हमें हँसी आती है। लेकिन प्रागैतिहासिक मानव के लिए वे ज़रा भी हँसने की बातें नहीं थीं।

अभी तक उसे नियमों के अस्तित्व का पता नहीं था। और यही कारण था कि उसके लिए जीवन अपवादों से ओत-प्रोत था। उसने देखा कि कोई दो पत्थर एक जैसे नहीं होते। और इसीलिए वह यह भी समझता था कि उनमें गुण भी अलग-अलग ही होंगे। जब वह चकमक की नई कुदाल बनाता, तो वह उसे बिलकुल पहली कुदाल

जैसा ही बनाने की कोशिश करता, ताकि वह भी ज़मीन को उतनी ही अच्छी तरह से तोड़े।

सैकड़ों और हज़ारों साल गुज़र गए। मनुष्य के हाथों से जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पत्थर निकले थे, उनसे उसे पत्थरों के बारे में एक सामान्य समझ होने लगी। चूँकि सभी पत्थर सख़्त थे, इसलिए वह निश्चित रूप से कह सकता था कि पत्थर सख़्त होता है। चूँकि कोई पत्थर कभी नहीं बोला था, इसलिए वह कह सकता था कि पत्थर नहीं बोलते।

इस तरह विज्ञान के पहले कणों, वस्तुओं की संकल्पना का जन्म हुआ। जब कारीगर कहता था कि चकमक एक सख़्त पत्थर है, तो उसका आशय जिस टुकड़े पर वह उस समय काम कर रहा होता था, उसी से नहीं, चकमक के किसी भी टुकड़े से होता था।

अतः उसे प्रकृति के किसी कानून की, पृथ्वी पर प्रचलित किसी नियम की जानकारी प्राप्त हो चुकी थी।

'वसन्त सर्दियों के बाद आता है।' इसमें सचमुच आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यह बिलकुल प्रत्यक्ष है कि सर्दियों के बाद शरद नहीं, वसन्त ही आता है। लेकिन ऋतु-परिवर्तन हमारे पूर्वजों द्वारा लम्बे अवलोकन के बाद की गई सबसे पहली वैज्ञानिक खोजों में से एक है। लोगों ने वर्षों की गणना करना इस बात को समझने के बाद ही सीखा कि सर्दी और गरमी अकस्मात ही नहीं आ जाती हैं, बल्कि वसन्त सदा सर्दियों के बाद आता है और फिर वसन्त के बाद गरमी और शरद का आगमन होता है।

मिस्रवासियों ने यह खोज नील नदी की बाढ़ों को देख-देखकर की। वे एक बाढ़ से अगली बाढ़ तक के समय को एक वर्ष मानते थे।

पुरोहित लोग नदी पर निगरानी रखते थे, क्योंकि लोगों का ख्याल था कि नदी भी कोई देवता है। आज तक मिस्र के मन्दिरों की दीवारों पर, जो नील तक पहुँचती थीं, छोटी-छोटी लकीरें बनी हुई हैं जिनकी सहायता से पुरोहित लोग पानी के स्तर को नापा करते थे।

जुलाई के महीने में, जब खेतों की ज़मीन गरमी से चिटकने लगती थी, किसान लोग उस समय की बेचैनी के साथ प्रतीक्षा करने लगते थे, जब नील नदी का पीला, गादभरा पानी सिंचाई की नालियों में होकर बहने लगेगा। लेकिन शायद इस साल वह आएगा ही नहीं? अगर देवता लोगों से नाराज़ हो गए हों और वे उनके खेतों में पानी न भेजें, तो?

सभी तरफ से मन्दिरों में भेंटें और चढ़ावे लाए जाते। किसान अपने अनाज के आख़िरी मुट्ठे लेकर पुजारियों के पास आते और उनसे अनुनय करते कि ज़रा ज़ोर से देवताओं की स्तुति करें।

हर दिन ऊषा काल में पुजारी यह देखने के लिए नदी पर जाते कि पानी ने चढ़ना शुरू किया या नहीं।

हर शाम को वे मन्दिर की चौरस छत पर चढ़कर घुटने टेककर तारों को निहारते। तारों भरा आकाश उनका पंचांग था।

और फिर एक दिन पुरोहित लोग मन्दिर में गंभीरतापूर्वक घोषणा करते, 'देवताओं ने तुम पर कृपा की है - आज से तीन रात बाद तुम्हारे खेतों में पानी आ जाएगा।'

धीरे-धीरे, क़दम-ब-क़दम, लोगों ने उस विचित्र दुनिया को जानना शुरू किया, जिसमें वे रहते थे - परियों की कहानियों और जादू-टोने की दुनिया को नहीं, बल्कि ज्ञान की दुनिया को। मन्दिरों की छतें पहली ज्योतिष वेधशालाएँ थीं। कुम्हारों और ठठेरों के ठीहे पहली प्रयोगशालाएँ थीं, जिनमें पहले प्रयोग किए गए थे।

लोग प्रेक्षण करना, गणना करना और निष्कर्ष निकालना सीख रहे थे। इस प्राचीन विज्ञान की आधुनिक विज्ञान से बहुत कम समानता थी। यह अभी तक उस जादू-टोने से बहुत मिलता था, जिसका यह एक अंग भी था। लोग तारों का केवल प्रेक्षण ही नहीं करते थे, वे उनसे भाग्यफल भी बताते थे। आकाश और धरती का अध्ययन करते समय वे आकाश और धरती के देवताओं की भी आराधना करते थे। फिर भी, अज्ञान का घना कुहरा छँटने लगा था।

देवताओं ने देवलोक का रास्ता पकड़ा

जादू-टोने की दुनिया के कुहासे में से वस्तुओं की वास्तविक रूपरेखाएँ धीरे-धीरे मनुष्य के आगे उभरने लगीं।

एक ज़माना था, जब प्रागैतिहासिक लोगों को विश्वास था कि हर कहीं-हर पत्थर में, हर पेड़ में, हर जीव में-आत्माओं का वास है।

लेकिन समय के साथ यह विश्वास ग़ायब हो गया।

मनुष्य ने यह सोचना बन्द कर दिया कि हर जानवर में कोई आत्मा रहती है। उसकी कल्पना में अब वन-देवता ने, जो घने जंगल में रहता था, सभी जानवरों की आत्माओं की जगह ले ली।

किसान ने यह सोचना बन्द कर दिया कि गेहूँ के हर पूले में आत्माओं का वास है। उसके दिमाग़ में अनाज में रहने वाली सभी आत्माएँ उर्वरता की देवी में एकाकार हो गईं, जो हर चीज़ को उगाती थी।

इन देवी-देवताओं ने पुरानी आत्माओं की जगह ले ली। अब वे सामान्य मनुष्यों के साथ नहीं रहते थे। ज्ञान उनको मनुष्य के निवास से अधिकाधिक दूर धकेलता गया। इसके कारण उन्हें ऐसी जगहें

तलाश करनी पड़ीं, जहाँ मनुष्य ने कभी पैर नहीं धरा था - अंधेरे और पवित्र वन या पेड़ों से भरे पर्वत शिखर।

लेकिन कुछ समय के बाद मनुष्य इन जगहों में भी पहुँच गया। ज्ञान ने अंधेरे जंगलों को आलोकित कर दिया, पर्वतों की ढालों पर छाए कुहरे को इसने छिन्न-भिन्न कर दिया।

और इसलिए देवताओं को एक बार फिर उनके नए निवास स्थान से निकाल दिया गया। अब वे आकाश पर जा चढ़े, समुद्रों के पेंदे में चले गए और पृथ्वी की सतह के नीचे अंधकारमय पाताल में जा विलीन हो गए।

देवताओं का पृथ्वी पर अवतरण अधिकाधिक कम होता गया। उस समय के बारे में दन्तकथाएँ पीढ़ी-से-पीढ़ी को मिलती रहीं जब वे किसी युद्ध या क़िले की घेरेबन्दी में भाग लेने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर आते रहते थे।

तलवारों और भालों से लैस होकर देवता मनुष्यों के झगड़ों में भाग लिया करते थे। निर्णायक घड़ी में वे नेता को घने बादल की आड़ में कर देते थे और शत्रु को मार दिया करते थे। लेकिन कथाकार कहते हैं, यह सब बहुत-बहुत पहले हुआ करता था।

इस तरह मानविक अनुभव देवताओं को पास से दूर, वर्तमान से भूतकाल और इहलोक से 'परलोक' की तरफ हटाता अधिकाधिक आगे बढ़ता गया।

देवताओं के साथ कोई भी व्यवहार-संचार करना कठिन हो गया। पहले हर कोई 'चमत्कार' और जादू-टोने के अनुष्ठान कर सकता था। अनुष्ठान स्वयं कहीं सरल होते थे। मिसाल के तौर पर, वर्षा लाने के लिए आदमी का मुँह में पानी भरकर एक विशेष नृत्य करते हुए उसे चारों तरफ फुहारकर छोड़ देना ही काफ़ी था। बादलों को बिखेरने के लिए आदमी छत पर चढ़ जाता और पवन के रूप में फूँक मारता।

अब हम जानते हैं कि न हम इस तरह पानी बरसा सकते हैं और न फूँक मारकर बादलों को बिखरा सकते हैं। और आदमी भी इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि देवता उसकी प्रार्थनाओं को आसानी से नहीं सुनेंगे। तभी पुजारी ने सामान्य जनों और देवताओं के बीच अपनी जगह ले ली, क्योंकि वह सभी संस्कारों और विधि-विधानों को, देवताओं की सभी गुप्त कथाओं को जानने का दावा करता था।

पहले सयाना शिकारी नृत्य का मात्र निदेशक ही हुआ करता था। अपने कुल के सदस्यों के मुकाबले वह आत्माओं के ज़्यादा पास नहीं होता था।

लेकिन अब पुरोहित एक बिलकुल ही अलग हस्ती बन गया। वह देवताओं के निकट एक पवित्र वाटिका में रहा करता था। सितारों की पोथी में से देवताओं की इच्छा को पढ़ने के लिए वह मन्दिर की छत पर जाता था। इस पोथी को केवल वही पढ़ सकता था। लड़ाई के पहले वह बलि के जीव की अन्तड़ियों को ही देखकर उसका परिणाम - जीत या हार - बता सकता था। अन्त में पुरोहित मनुष्यों और देवताओं के बिचौलिये बन गए।

लेकिन साधारण मनुष्यों से देवता दूर और दूर ही जाते रहे। वह समय बीत चुका था जब देवता सभी मनुष्यों को बराबर समझते थे। अब लोग खुद अपनी और अपने पास-पड़ोस की तरफ देखते थे और अनुभव करते थे कि समानता की पुरानी अवस्था अब बाक़ी नहीं रही है। 'होना भी ऐसा ही चाहिए', पुजारियों ने कहा। 'मनुष्य को हर बात देवताओं पर ही छोड़ देनी चाहिए। जिस तरह राजा और सरदार मनुष्यों पर राज करते हैं, उसी प्रकार देवता दुनिया पर शासन करते हैं।' लेकिन पुजारियों के उपदेशों को विनम्रतापूर्वक सुनने से सभी लोगों को संतोष नहीं होता था। ऐसे भी लोग थे, जो देवताओं की इच्छा के आगे झुकने को तैयार न थे।

सोच का क्षितिज और फैला

प्रागैतिहासिक मानव सत्य और कथा, ज्ञान और अंधविश्वास के भेद को नहीं जानता था।

दूध अगर रखा रहे, तो जिस तरह उससे मलाई को अलग होने में समय लगता है, उसी तरह ज्ञान को अंधविश्वास से अलग होने में हज़ारों वर्ष लग गए।

हम तक जो गीत और महाकाव्य आए हैं, उनमें देवताओं और वीरों के क़िस्सों से विभिन्न क़बीलों और सरदारों के इतिहास को गढ़े हुए भूगोल से सही भौगोलिक ज्ञान को और प्राचीन आख्यानों से तारों के बारे में पहली जानकारी को अलग करना कठिन है।

इन आख्यानों में सत्य कल्पना के साथ घुला-मिला हुआ है। लेकिन कल्पना का अन्त और सत्य का आरम्भ भी तो कहीं न कहीं होगा ही। कहाँ? यह तुम सोचो!

(समाप्त)

'मनुष्य महाबली कैसे बना!' से साभार

प्रस्तुति : राजेश उत्साही

लगभग दो साल तक चला यह धारावाहिक इस अंक में समाप्त हो गया है। यह प्रस्तुति तुम्हें कैसी लगी। मानव के विकास की इस कहानी में यदि तुम्हें कुछ समझ में नहीं आया हो या कुछ सवाल हों, तो हमें लिखो।

मार्च, 1995 के अंक में व्यंग्य चित्रकार यूसुफ साहू का बिना संवाद का यह कार्टून प्रकाशित हुआ था। बहुत सारे पाठकों ने हमें संवाद लिखकर भेजे हैं। चार सबसे अच्छे संवाद यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। इन्हें जल्द ही उपहार में एक पुस्तक भेजी जाएगी।

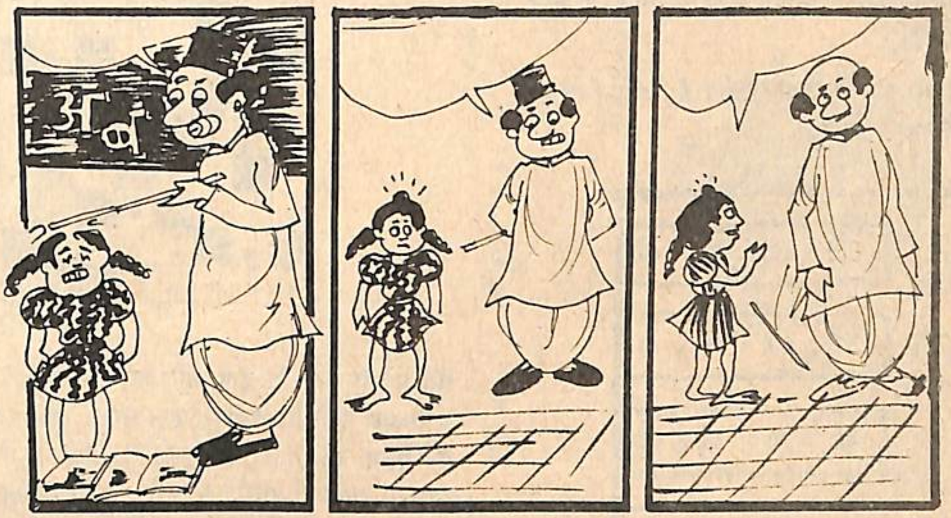

॥ एक ॥

मास्टर जी : बताओ तुम्हें भूगोल में क्या-क्या आता है?

बिन्दु : और तो कुछ नहीं आता, आपकी छड़ी को देखकर पसीना ज़रूर आता है।

❑ पंकज कुमार, ग्यारह वर्ष, ओगणा, उदयपुर, राजस्थान

॥ दो ॥

मास्टर जी : पिंकी, तुमसे इतना भी नहीं बनता कि 'अ' के बाद कौन-सा अक्षर आता है?

पिंकी : मास्टर जी बनता तो आपसे भी नहीं है और ऊपर से पिटाई करते हो।
....क्योंकि आपने 'अ' के बाद 'ब' लिखा है।

❑ सत्येन्द्र मिश्रा, शाहपुर मागरौन, सागर, म.प्र.

॥ तीन ॥

मास्टर जी : बताओ वह कौन-सी चीज़ है जिसे तुम देख सकती हो, लेकिन पकड़ नहीं सकती।

लड़की : सर, आपके कान।

❑ मुक्ति नायक, सातवीं, ईशानगर, छतरपुर, म.प्र.

॥ चार ॥

अध्यापक : सुधा तुम रोज़-रोज़ झूठ बोलती रहती हो।
.....तुझे इतनी बार कहा कि एक बार झूठ बोलने से एक बाल उड़ जाता है।

सुधा : तो सर आप कितनी बार झूठ बोलते हैं कि आपके सारे बाल उड़ गए।

❑ पवन सोनी, लाडनूँ, नागौर, राजस्थान

बधाई!

चकमक के सुपरिचित लेखक डॉ. श्रीप्रसाद तथा श्री रामवचन सिंह आनन्द को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने बाल साहित्य के लिए सम्मानित किया है।

डॉ. श्रीप्रसाद को संस्थान ने अपना सर्वोच्च बाल साहित्य सम्मान 'बाल साहित्य भारती' प्रदान किया है। श्री आनन्द को श्रेष्ठ बाल साहित्य साधना के लिए 'पं. सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान' दिया गया है।

चकमक की ओर से हार्दिक बधाई!

1. 15
2. 20 बकरियाँ 120 दिन तक उसी चारागाह से काम चला सकती हैं।
4. जिस बच्चे के जो-जो सवाल सही हैं, उन्हें चित्र में गोले से दिखाया गया है।

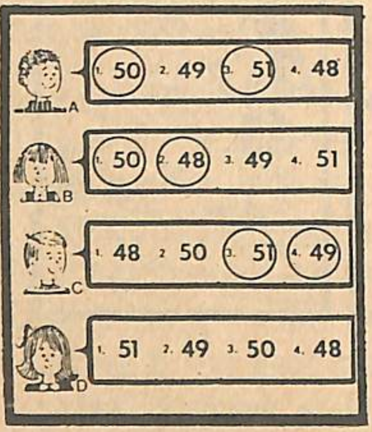

5. तीन साल बाद 10% वृद्धि के हिसाब से भोपाल की जनसंख्या लगभग 18,63,400 होगी।
6. "क्या तुम सो रहे हो?"
7. वास्तव में दोनों ही प्रणालियों में -40 डिग्री एक ऐसा बिन्दु है, जहाँ दोनों थर्मामीटर एक ही तापमान दिखाते हैं।

वर्ग पहेली- 45 : हल

1 सो	2 म		3 म	4 नि	हा	5 रि	न
	6 ना	ना	रा	ज		सा	
7 घ	ना		ठी		8 सु	ना	9 र
क		10 ह		11 ही	रा		ह
घ		12 रा	हू		ही		मा
13 क	14 र	म		15 बे		16 जि	न
	सा		17 ज	ग	म	ग	
18 म	ल	या	ल	म		19 र	थ

वर्ग पहेली- 45 के हल बहुत सारे पाठकों ने भेजे हैं और अधिकांश सही हैं। सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठकों के नाम हैं- ऋचा शर्मा, ज़रीना मुश्ताक, भोपाल। निकिता टेलर, ब्यावरा, राजगढ़। संजीव तिवारी, माँदर; दीपिका चौबे, गुना; आर.एल. टण्डन, गिरौदपुरी, जितेन्द्र देवांगन, सभी रायपुर। मुक्ति नायक, ईशानगर, छतरपुर। राजेन्द्रसिंह राठौर, सामन्तपुर, शहडोल। चन्द्रेश श्रीमाल, मंदसौर। मनजीत नायक, चन्द्रपुर, एम.एल. अहिरवार, लोरमी, भरतलाल यादव, रजगामर, सभी बिलासपुर। जुल्फकार अलीशाह, नाहरगढ़, मन्दसौर। मोनू गुप्ता, भैंसबोड़, सुमित दुबे, दाढ़ी, दुर्ग। रजनी श्रीवास्तव, मुरार, ग्वालियर। पंकज भार्गव, सांईखेड़ा, रायसेन। प्रदीपशुक्ल, मनगंवा, रीवा। सीमा वर्मा, बाबई, होशंगाबाद। सभी मध्यप्रदेश। **इन सभी को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी।**

फार्म 4 (नियम 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में विवरण

प्रकाशन का स्थान	:	भोपाल	सम्पादक का नाम	:	विनोद रायना
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
प्रकाशक का नाम	:	विनोद रायना	पता	:	एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
राष्ट्रीयता	:	भारतीय			
पता	:	एकलव्य ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016			
मुद्रक का नाम	:	विनोद रायना	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	:	रेक्स डी रोज़ारियो एकलव्य ई-1/25 अरेरा कालोनी, भोपाल-462016
राष्ट्रीयता	:	भारतीय			
पता	:	एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016			

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई, 1995

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

33
C·322

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/95

निकिता धारवाल, चार वर्ष, भिलाई, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना